जे त्रिजगउदरमझार प्रानी, तपत अति दुद्धर खरे।
तिन अहितहरन सुवचन जिनके, परमशीतलताभरे॥
तसु भ्रमरलोभित घ्राण पावन, सरस चन्दन घसि सचूँ।
अरहंत श्रुत सिद्धांत गुरु, निरग्रंथ नितपूजा रचूँ॥२॥

दोहा।

चन्दन शीतलता करै, तपत वस्तु परवीन।
जासों पूजों परमपद, देवशास्त्रगुरु तीन॥२॥

ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह भवसमुद्र अपार तारण,-के निमित्त सुविधि ठही।
अतिदृढ़ परम पावन जथारथ, भक्ति वर नौका सही॥
उज्जल अखंडित सालितंदुल-पुंज धरि त्रयगुण जचूँ।
अरहंत श्रुत सिद्धांत गुरु, निरग्रंथ नितपूजा रचूँ॥३॥

दोहा।

तंदुल सालि सुगन्धि अति, परम अखंडित बीन।
जासों पूजों परम पद, देव शास्त्र गुरु तीन॥३॥

ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥३

जे विनयवंत सुभव्य-उर-अंबुज-प्रकाशन भान हैं।
जे एक मुखचारित्र भाषत, त्रिजगमाहिं प्रधान हैं॥
लहि कुंदकमलादिक पहुप, भव भव कुवेदनसों बचूँ।
अरहंत श्रुत सिद्धांत गुरु, निरग्रंथ नित पूजा रचूँ॥४॥

---

१ कठिन। २ श्रेष्ठ। ३ धान। ४ हृदयकमल। ५ पुष्प।

दोहा ।

विविध भांति परिमल सुमन, भ्रमर जास आधीन ।
तासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा

अतिसबल मद कंदर्प जाको, क्षुधा उरग अमान है
दुस्सह भयानक तासु नाशन,-को सुगरुड़ समान है
उत्तम छहोंरसयुक्त नित, नैवेद्य कर घृतमें पचूँ ।
अरहंत श्रुत सिद्धांत गुरु, निरग्रंथ नितपूजा रचूँ ॥५

दोहा ।

नानाविध संयुक्तरस, व्यंजन सरस नवीन ।
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय चरुं निर्वपामीति स्वाहा

जे त्रिजगउद्यम नाश कीनें, मोहतिमि [illegible]वली
तिहि कर्मघाती ज्ञानदीप, प्रकाश जोतिप्रभावली ।
इहिभांति दीप प्रजाल कंचन,-के सुभाजनमें खचूँ
अरहंत श्रुत सिद्धांत गुरु, निरग्रंथ नितपूजा रचूँ ॥ ६ ॥

दोहा ।

स्वपरप्रकाशक जोति अति, दीपक तमकरि हीन
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥ ६

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं [illegible]

---

१ सुगंध । २ पुष्प । ३ सर्प । ४ प्रमाणरहित । ५ पकवान वगैरह । ६ अच वगैरह । ७ अंधेरा ।

जो कर्म-ईंधन दहन, अग्निसमूहसम उद्धत लसै।
वरधूप तासु सुगन्धिताकरि, सकल परिमलता हँसै॥
इहभाँति धूप चढ़ाय नित, भवज्वलनमाहिं नहीं पचूँ।
अरहंत श्रुत सिद्धांत गुरु, निरग्रंथ नितपूजा रचूँ॥ ७॥

दोहा।

अग्निमाहिं परिमल दहन, चन्दनादि गुणलीन।
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन॥ ७॥

ॐह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा

लोचन[1] सुरसना घ्राण उर, उत्साहके करतार हैं।
मोपै न उपमा जाय वरणी, सकल फल गुणसार हैं॥
सो फल चढ़ावत अर्थपूरन, सकल अमृतरससचूँ।
अरहंत [illegible]त सिद्धांत गुरु, निरग्रंथ नितपूजा रचूँ॥ ८॥

दोहा।

जे प्रधानफल फलविषैं, पंचकरण[2]रसलीन।
जासों पूजों परमपद देव शास्त्र गुरु तीन॥ ८॥

ॐह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल परम उज्वल गंध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरूँ।
वरधूप निर्मल फल विविध, बहुजनमके पातक हरूँ॥
इहिभाँति अर्घ चढ़ाय नित, भवि करत शिवपंकति मचूँ
अरहंत श्रुत सिद्धांत गुरु, निरग्रंथ नितपूजा रचूँ॥ ९॥

१ नेत्र। २ पंचेंद्रिय। [illegible] ४ रचूं।

दोहा ।

वसुविध अर्घ संजोयकै, अतिउछाह मन कीन ।
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥ ९

ॐह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

जयमाला ।

देव शास्त्र गुरु रतन शुभ, तीन रतन करतार ।
भिन्न भिन्न कहुँ आरती, अल्प सुगुण विस्तार ॥१

पद्धड़िछन्द ।

चउकर्मकि त्रेसठ प्रकृति नाशि, जीते अष्टादशदं
परांशि । जे परम सुगुण हैं अनंत धीर, कहवत
छ्यालिस गुण गँभीर ॥ २ ॥ शुभ समवशरण शोभ
अपार, शतइन्द्र नमत करें शीस धार । देवाधिदेव अरह
देव, वन्दों मनवचतनकरि सुसेव ॥ ३ ॥ जिनकी धु
है ओंकाररूप, निरअक्षरमय महिमा अनूप । दशअष्ट
हाभाषासमेत, लघुभाषा सात शतक सुचेत ॥ ४ ॥
स्यादवादमय सप्तभंग, गणधर गूँथे बारह सुअंग । रवि
शशिन हरै सो तम हराय, सो शास्त्र नमों वहु प्री
त्याय ॥ ५ ॥ गुरु आचारज उवझाय साध, तन न
रतनत्रय निधि अगाध । संसार देह वैरागधार, निरवां
तपै शिवपदनिहार ॥ ६ ॥

---

१ उत्साह । २ समूह । ३ एक सौ । ४ हाथ । ५ सूर्य । ६ चंद ।

णछत्तिस पच्चिस आठवीस, भव तारनतरन जिहाज
श। गुरुकी महिमा वरनी न जाय, गुरुनाम जपों
नवचनकाय ॥

सोरठा।

कीजे शक्तिप्रमान, शक्तिविना सरधा धरै।
"द्यानत" श्रद्धावान, अजर अमरपद भोगवै॥८॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*शान्तिपाठ।

चौपाई (१६ मात्रा)

शान्तिनाथमुख शशिउनहारी[1], शीलगुणव्रतसंजमधारी। लखन[2] एकसौआठ विराजैं, निरखत नयनकमलदल[3] लाजैं॥ पंचमचक्रवर्तिपदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी। इन्द्रनरेंद्रपूज्य जिननायक, नमों शान्तिहित शान्तिविधायक॥ दिव्यविटप[4] पहुपनकी[5] बरसा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा। छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी॥ शान्ति जिनेश शान्तिसुखदाई, जगतपूज्य पूजों सिर नाई। परमशान्ति दीजे हम सबको, पढ़ैं जिन्हें, पुनि चार संघको॥

---

* शांतिपाठ बोलते समय दोनों हाथोंसे पुष्पवृष्टि करते जाना चाहिए।

१ चंद्रमाके समान। २ लक्षण। ३ पत्ता। ४ सुंदर वृक्ष, अशोक वृक्ष। ५ पुष्प। ६ दिव्य [illegible]रे।

वसन्ततिलका ।

पूजैं जिन्हैं मुकुट हार किरीट लाके,
इन्द्रादिदेव, अरु पूज्य पदाब्ज जाके ।
सो शान्तिनाथ वरवंशजगत्प्रदीप,
मेरे लिये करहिं शान्ति सदा अनूप ॥ ५ ॥

इन्द्रवज्रा ।

संपूजकोंको प्रतिपालकोंको, यतीनको औ यतिनायकोंको । राजा प्रजा राष्ट्रसुदेशको ले, कीजे सुखी हे , शान्तिको दे ॥ ६ ॥

मन्दाक्रान्ता ।

होवै सारी प्रजाको सुख बलयुत हो धर्मधारी नरेशा ।
होवै वर्षा समैपै तिलभर न रहै व्याधियोंका अँदेशा ॥
होवै चोरी न जारी सुसमय वरतै हो न दुष्काल भारी ।
सारे ही देश धारैं जिनवरवृषको जो सदासौख्यकारी॥

दोहा ।

घातिकर्म जिन नाशकर, पायो केवलराज ।
शान्ति करैं सो जगतमें, वृषभादिक जिनराज ॥

मन्दाक्रान्ता ।

शास्त्रोंका हो पठन सुखदा लाभ सत्संगतीका ।

---

१ मुकुट । २ चरणारविंद । ३ जगतको प्रकाशित करनेवाले । ४ मातुओंको । ५ देश । ६ राजा । ७ धर्म । ८ ज्ञानावरण, दर्शनावर्ण, मोहनीय, अंतराय । ९ केवलज्ञान ।

सद्वृत्तोंका सुजस कहके दोष ढांकूं सभीका ॥
बोलूं प्यारे वचन हितके आपका रूप ध्याऊं ।
तौलौं सेऊं चरन जिनके मोक्ष जौलौं न पाऊं ॥

आर्या ।

तुवपदं मेरे हियमें, मम हिय तेरे पुनीतचरणोंमें ।
तबलौं लीन रहें प्रभु, जबलौं पाया न मुक्तिपद मैंने ॥
[illegible]-अक्षरपदमात्रासे दूपित जो कछु, कहा गया मुझसे ।
न क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणाकरि पुनि छुड़ाउ भवदुखसे ॥
हे जगबन्धु जिनेश्वर, पाऊं तव चरणशरण बलिहारी ।
मरणसमाधि सुदुर्लभ, कर्मोंका क्षय सुबोध सुखकारी ॥

(परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।)

विसर्जनपाठ ।

दोहा ।

बिन जाने वा जानके, रही टूट जो कोय ।
तुव प्रसादतें परमगुरु, सो सब पूरन होय ॥ १ ॥
पूजनविधि जानों नहीं, नहिं जानों आह्वान ।
और विसर्जन हू नहीं, क्षमा करो भगवान ॥ २ ॥
मंत्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव ।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरणकी सेव ॥ ३ ॥

---

१ गुण । २ चरण । [illegible] फिर ।

आये जो जो देवगण, पूजे भक्तिप्रमान ।
सो अब जावहु कृपाकर, अपने अपने थान ॥ ४ ॥

प्रश्नावली ।

१ पूजनसे क्या समझते हो और पूजनके लिए किन २ वस्तु- ओंकी आवश्यकता है? पूजनके अष्टद्रव्योंके नाम बताओ ।

२ पूजनके पश्चात् शांतिपाठ क्यों पढ़ा जाता है और पूजनके पूर्वमें आह्वान क्यों किया जाता है?

३ अर्घ्य किसे कहते हैं और अर्घ्य कब चढ़ाया जाता है?

४ अष्ट द्रव्य जो चढ़ाए जाते हैं, वे किसी क्रमसे चढ़ाए जा- हैं या जिसे चाहे उसे पहले चढ़ा देते हैं?

५ पूजा खड़े होकर करना चाहिए या बैठकर? पूजा करने- वालेको सबसे पहले और सबसे अंतमें क्या करना चाहिए?

६ अष्ट द्रव्योंके चढ़ानेके पश्चात् जो जयमाल पढ़ी जाती है उसमें किस बातका वर्णन होता है?

७ अक्षत और फल चढ़ानेके छंद पढ़ो और यह बताओ। छंद पढ़नेके पश्चात् क्या कहकर द्रव्य चढ़ाना चाहिए?

दूसरा पाठ ।

पंच परमेष्ठीके मूलगुण ।

परमेष्ठी उसे कहते हैं, जो परमपदमें स्थित हो ये पांच होते हैं:— १ अरहंत, २ सिद्ध, ३ आचार्य ४ उपाध्याय, और ५ सर्व साधु ।

अरहंत उन्हें कहते हैं, जिनके ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनी और अंतराय, ये चार घातिया कर्म नाश होगए हों, और जिनमें निम्न लिखित ४६ गुण हों और १८ दोष न हों।

दोहा।

चौतीसों अतिशय सहित, प्रातिहार्य पुनि आठ।
अनंत चतुष्टय गुण सहित, छीयालीसों पाठ॥

अर्थात् ३४ अतिशय, ८ प्रातिहार्य, और ४ अनंत चतुष्टय। ३४ अतिशयोंमें से १० अतिशय जन्मके होते हैं, १० केवल ज्ञानके होते हैं और १४ देवकृत होते हैं।

जन्मके दश अतिशय।

अतिशयरूप सुगंध तन, नाहिं पसेव निहार।
प्रियहितवचन अतुल्यवल, रुधिर श्वेतआकार।
लक्षण सहसरु आठ तन, समचतुष्क संठान।
वज्रवृषभनाराचजुत, ये जनमत दश जान॥

१ अत्यन्त सुन्दर शरीर, २ अतिसुगन्धमय शरीर, ३ पसेवरहित शरीर, ४ मलमूत्ररहित शरीर, ५ हितमितप्रियवचन बोलना, ६ अतुल्यबल, ७ दूधसमान श्वेतरुधिर, ८ शरीरमें १००८ एक हजार आठ लक्षण, ९ समचतुं-

---

१ अद्भुत बात, ऐसी अनोखी बात जो साधारण मनुष्योंमें न पाई जावे। २ अनंत। ३ पसीना। ४ जिसकी कोई तुलना न हो। ५ सुडौल सुन्दर आकार।

स्र संस्थान, १० और वज्रवृषभनाराचसंहनन, ये दश अतिशय अरहन्तभगवानके जन्मसे ही उत्पन्न होते हैं।

केवल ज्ञानके दश अतिशय।

योजन शत इकमें सुभिख, गगनगमन मुख चार।
नहिंअदया उपसर्ग नहिं, नाहीं कवलाहार॥
सबविद्या ईश्वरपनो, नाहिं बढ़ैं नखकेश।
अनिमिष दृग छायारहित, दशकेवलके वेश॥

१ एकसौ योजनमें सुभिक्षता, अर्थात् जिसस्थानमें केवली हों उनसे चारों तरफ सौ सौ कोसमें सुकाल होना, २ आकाशमें गमन, ३ चारों ओर मुखोंका दीखना, ४ अदयाका अभाव, ५ उपसर्गका न होना, ६ कवल (ग्रास) आहार न होना, ७ समस्तविद्याओंका स्वामीपना, ८ नखकेशोंका न बढ़ना, ९ नेत्रोंकी पलकें न झपकना, १० और शरीरकी छाया न पड़ना, ये दश अतिशय केवलज्ञानके होनेके समय प्रगट होते हैं।

देवकृत चौदह अतिशय।

देवरचित हैं चारदश, अर्द्धमागधी भाष।
आपसमाहीं मित्रता, निर्मलदिश आकाश॥
होत फूलफल ऋतु सबै, पृथिवी कांचसमान।

१ हाड़, वेष्टन और कीलोंका वज्रमय होना। २ आकाश। ३ ग्रासाहार। ४ बाल। ५ भाषा। ६ दिशा। ७ कांच, दर्पण।

चरण कमल तल कमल है, नभतें जय जय वान ॥
मन्द सुगंध बयारि पुनि, गंधोदककी वृष्टि ।
भूमिविषें कण्टक नहीं, हर्षमयी सब सृष्टि ॥
धर्मचक्र आगे रहै, पुनि वसुमंगल सार ।
अतिशय श्रीअरहंतके, ये चौंतीस प्रकार ॥

(१ भगवान्की अर्द्ध मागधी भाषाका होना, २ समस्तजीवोंमें परस्पर मित्रताका होना, ३ दिशाओंका निर्मल होना, ४ आकाशका निर्मल होना, ५ सब ऋतुके फलफूल धान्यादिकका एक ही समय फलना, ६ एक योजन तककी पृथिवीका दर्पणवत् निर्मल होना, ७ चलते समय भगवान्के चरण कमलके तले सुवर्ण कमलका होना, ८ आकाशमें जयजय ध्वनिका होना, ९ मन्द सुगन्धित पवनका चलना, १० सुगंधमय जलकी वृष्टि होना, ११ पवनकुमार देवोंके द्वारा भूमिका कण्टकरहित होना, १२ समस्त जीवोंका आनन्दमय होना, १३ भगवान्के आगे धर्मचक्रका चलना, १४ छत्र-चमर ध्वजा घंटादि अष्टमंगल द्रव्योंका साथ रहना। इस प्रकार सब मिलाकर ३४ अतिशय अरहन्त भगवान्के होते हैं।

---

१ आकाश । २ वाणी । ३ हवा । ४ कांटे, कंकर । ५ आठ ।

आठ प्रातिहार्य।

तरु अशोकके निकटमें, सिंहासन छविदार।
तीनछत्र सिरपर लसैं, भामण्डलपिछवार॥
दिव्यध्वनि मुखतैं खिरै, पुष्पवृष्टि सुर होय।
ढोरैं चौसठि चमर जख, बाजैं दुन्दुभि जोय॥

अर्थात्—१ अशोक वृक्षका होना, २ रत्नमय सिंहासन, ३ भगवानके सिरपर तीनछत्रका होना, ४ भगवानके पीठके पीछे भामण्डलका होना, ५ भगवानके मुखसे निरक्षरी दिव्य ध्वनिका होना, ६ देवोंके द्वारा पुष्पवृष्टिका होना, ७ यक्ष देवोंकर चौंसठ चमरोंका ढुरना; और ८ दुन्दुभिबाजोंका बजना, ये आठ प्रातिहार्य हैं।

अनन्त चतुष्टय।

ज्ञान अनंत अनंत सुख, दरस अनंत प्रमान।
बल अनन्त अरहन्त सो, इष्टदेव पहिचान॥

१ अनन्त दर्शन, २ अनन्त ज्ञान, ३ अनन्त सुख, ४ अनन्त वीर्य। इस प्रकार ४६ गुण अरहन्त परमेष्ठीमें होते हैं।

अठारह दोष।

जनम जरा तिरषा क्षुधा, विस्मय आरत खेद।

---

१ पीछे। २ भगवानकी अक्षर रहित सबकी समझमें आने वाली सुंदर अनुपम वाणी। ३ देव। ४ यक्ष जातिके देव। ५ जिसका अंत न हो। ६ बुढ़ापा। ७ आश्चर्य। ८ क्लेश।

दशधर्म ।

छिमा मारदव आरजव, सत्यवचन चितपाँग ।
संजम तप त्यागी सरव, आकिंचन तियत्याग ॥

१ उत्तम क्षमा (क्रोध न करना), २ उत्तम मार्दव (मान न करना), ३ उत्तम आर्जव (कपट न करना) ४ उत्तम सत्य (सच बोलना), ५ उत्तम शौच (लोभ न करना), अंतःकरणको शुद्ध रखना, ६ उत्तम संयम (छह कायके जीवोंकी दया पालना और पांचों इन्द्रियोंको व मनको वशमें रखना), ७ उत्तम तप, ८ उत्तम त्याग (दान करना), ९ उत्तम आकिंचन (परिग्रह त्याग करना), १० उत्तम ब्रह्मचर्य (स्त्री मात्रका त्याग करना) ।

छह–आवश्यक ।

समता धर वंदन करै, नाना थुती बनाय ।
प्रतिक्रमण स्वाध्याय जुत, कायोत्सर्ग लगाय ॥

१ समता (समस्त जीवोंसे समता भाव रखना), २ वंदना (हाथ जोड़ मस्तकसे लगाकर नमस्कार करना), ३ पंचपरमेष्ठीकी स्तुति करना, ४ प्रतिक्रमण (लगे हुए दोषोंपर पश्चात्ताप) करना, ५ स्वाध्याय, ६ कायोत्सर्ग लगाकर अर्थात् खड़े होकर ध्यान करना ।

---

१ चित्तको पाक या [illegible] अर्थात् शौच । २ स्त्रीत्याग । ३ स्तुति ।

पंच आचार और तीन गुप्ति।

दर्शन ज्ञान चरित्र तप, वीरज पंचाचार।
गोपैं मन वच कायको, गिन छत्तीस गुन सार॥
१ दर्शनाचार, २ ज्ञानाचार, ३ चारित्राचार, ४ तप चार, ५ वीर्याचार, ये पांच आचार हैं।

१ मनोगुप्ति (मनको वशमें करना), २ वचन गु (वचनको वशमें करना), ३ काय गुप्ति (शरीर वशमें करना), ये तीन गुप्ति हैं।

इस प्रकार सब मिलाकर आचार्यके ३६ मूल गुण है

उपाध्याय परमेष्ठीके २५ मूलगुण।

उपाध्याय उन्हें कहते हैं, जो ११ अंग और पूर्वके पाठी हों। ये स्वयं पढ़ते और अन्य समीपव भव्योंको पढ़ाते हैं। इनके ११ अंग और १४ ये २५ मूलगुण होते हैं।

ग्यारह अंग।

प्रथमहिं आचारांग गनि, दूजौ सूत्रकृतांग।
ठाणअंग तीजौ सुभग, चौथौ समवायांग॥
व्याख्यापण्णति पांचमौं, ज्ञातृकथा षट आन।
पुनि उपासकाध्ययन है, अन्तःकृतदश ठान॥
अनुत्तरण उत्पाद दश, सूत्रविपाक पिछान।
बहुरि प्रश्नव्याकरण जुत, ग्यारह अंग प्रमान॥

१ वशमें करैं।

१ आचारांग, २ सूत्रकृतांग, ३ स्थानांग, ४ समवायांग, ५ व्याख्याप्रज्ञप्ति, ६ ज्ञातृकथांग, ७ उपासकाध्ययनांग, ८ अन्तःकृतदशांग, ९ अनुत्तरोत्पादकदशांग, १० प्रश्नव्याकरणांग, और ११ विपाकसूत्रांग, ये ग्यारह अंग हैं।

चौदह पूर्व।

उत्पादपूर्व अग्रायणी, तीजो वीरजवाद।
अस्तिनास्तिपरवाद पुनि, पंचम ज्ञानप्रवाद॥
छट्ठो कर्मप्रवाद है, सतप्रवाद पहिचान।
अष्टम आत्मप्रवाद पुनि, नवमों प्रत्याख्यान॥
विद्यानुवाद पूरव दशम, पूर्वकल्याण महन्त।
प्राणवाद किरियाबहुल, लोकविन्दु है अन्त॥

१ उत्पाद पूर्व, २ अग्रायणी पूर्व, ३ वीर्यानुवाद पूर्व, अस्तिनास्तिप्रवाद पूर्व, ५ ज्ञानप्रवाद पूर्व, ६ कर्मप्रवाद पूर्व, ७ सत्प्रवाद पूर्व, ८ आत्मप्रवाद पूर्व, ९ प्रत्याख्यान पूर्व, १० विद्यानुवाद पूर्व, ११ कल्याणवाद पूर्व, १२ प्राणानुवाद पूर्व, १३ क्रियाविशाल पूर्व, लोकविन्दुपूर्व, ये चौदह पूर्व हैं।

सर्वसाधुके २८ मूलगुण।

साधु उन्हें कहते हैं, जिनके निम्नलिखित २८ मूलगुण हों। वे मुनि तपस्वी कहलाते हैं। वे अपरिग्रही और निरारम्भी होते हैं और ज्ञान ध्यानमें लवलीन रहते हैं।

पंच महाव्रत।

हिंसा अनृत तसकरी, अब्रह्म परिग्रह पाय।
मन वच तनतैं त्यागवो, पंच महाव्रत थाय ॥

१ अहिंसा महाव्रत, २ सत्य महाव्रत, ३ अचौर्य महाव्रत, ४ ब्रह्मचर्य महाव्रत, ५ परिग्रहत्याग महाव्रत।

पंच समिति।

ईर्या भाषा एषणा, पुनि क्षेपण आदान।
प्रतिष्ठापनाजुत क्रिया, पाँचौं समिति विधान ॥

१ ईर्य्या समिति (आलसरहित चार हाथ आगे ज़मीन देखकर चलना), २ भाषा समिति (हितकारी प्रामाणिक, प्रिय वचन कहना), ३ एषणा समिति (दिनमें एकवार शुद्ध निर्दोष आहार लेना), ४ आदाननिक्षेपण समिति (अपने पासके शास्त्र, पीछी, कमंडलु आदिको भूमि देखकर सावधानीसे धरना उठाना) ५ प्रतिष्ठापन समिति (जीवोंसे रहित स्वच्छ भूमि देखकर मल मूत्र करना)।

शेष गुण।

सपरस रसना नासिका, नयन श्रोत्रका रोध।
पटआवशि मंजन तजन, शयन भूमिका शोध ॥

---

१ हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन और परिग्रह इन पांच पापोंके एकदेश त्यागको अणुव्रत और सर्वदेश त्यागको महाव्रत कहते हैं। २ आवश्यक। ३ शरीरको नहीं धोना।

वस्त्रत्याग कचलुंच अरु, लघुभोजन इक वार ।
दांतन मुखमें ना करें, ठाड़े लेहिं अहार ॥

१ स्पर्श, २ रसना, ३ घ्राण, ४ चक्षु, ५ श्रोत्र, इन पांचइन्द्रियोंको वशमें करना, ६ समता, ७ वन्दना ८ स्तुति, ९ प्रतिक्रमण, १० स्वाध्याय, ११ कायोत्सर्ग १२ स्नानका त्याग करना, १३ स्वच्छ भूमिपर सोना १४ वस्त्र त्याग करना, १५ बालोंका उखाड़ना, १६ एक वार थोड़ा भोजन करना, १७ दन्तधावन अर्थात् दांतौन न करना, १८ खड़े २ आहार लेना, इस प्रकार ये २८ मूलगुण सर्वसामान्य मुनियोंके होते हैं ।

प्रश्नावली ।

१ परमेष्ठी किसे कहते हैं ? परमेष्ठी पांच ही होते हैं या कुछ न्यूनाधिक भी ?

२ पंचपरमेष्ठीके कुल गुण कितने हैं ? मुनिके मूलगुण कितने हैं

३ जो जीव मोक्षमें हैं, उनके कितने और कौन २ गुण हैं

४ महावीरस्वामी जब पैदा हुए थे, तब उनमें अन्य मनुष्योंसे कौन २ असाधारण बातें थीं ?

५ अतिशय, प्रातिहार्य, आचार्य, गुप्ति, ऊनोदर, आकिंचन्य प्रतिक्रमण, वज्रवृषभनाराच संहनन, समचतुरस्र संस्थान, व्युत्सर्ग एषणासमिति, स्वाध्याय इनसे क्या समझते हो ?

६ समिति, महाव्रत, अंग, आवश्यक, और अनंतचतुष्टयके कुल भेद बताओ ।

७ शयन, स्नान पान, शौच स्नान और वस्त्राभरणके नियमोंमें, हममें और साधुओंमें क्या अंतर है ?

८ आवश्यक, पंचाचार, महाव्रत, समिति, प्रातिहार्य किनके होते हैं ?

१० पाठमें आए हुए १८ दोष किसमें नहीं होते ?

११ अरहंतके देवकृत अतिशयोंके नाम बताओ। ये अतिशय कब प्रगट होते हैं, केवलज्ञानके पहिले या पीछे ?

१२ एक लेख लिखो जिसमें यह दिखलाओ कि अरहंत भगवानमें और साधारण मनुष्योंमें बाहरी बातोंमें क्या अंतर है ?

१३ अरहंत मुनि हैं या नहीं? क्या समाम मुनियोंके केवलज्ञानके होनेपर केवलज्ञानके अतिशय प्रगट हो जाते हैं या केवल अरहंतोंके?

१४ यदि किसी मुनिसे कोई अपराध हो जाता है, तो वे क्या करते हैं ?

१५ उपाध्याय किनको पढ़ाते हैं और क्या पढ़ाते हैं ?

१६ भगवानकी जो वाणी खिरती है, वह किस भाषामें होती है ?

१७ पंच परमेष्ठीमें सबसे बड़ा पद किसका है और सबसे छोटा किसका ?

१८ आचार्य और साधु, इनमें पहिले कौनसे पदकी प्राप्ति होती है ?

१९ सिद्ध और अरहंत में क्या भेद हैं, और किसको पहिले नमस्कार करना उचित है ?

२० एक परमेष्ठीके गुण दूसरे परमेष्ठीमें रह सकते हैं या नहीं और मोक्षमें रहनेवाले जीवोंको पंच परमेष्ठी कह सकते हैं या नहीं ?

तीसरा पाठ।

चौवीस तीर्थंकरोंके नाम चिह्नसहित।

नामतीर्थंकर	चिह्न	नामतीर्थंकर	चिह्न
वृषभनाथ	वृषभ (वैल)	विमलनाथ	शूकर (सुअर)
अजितनाथ	हाथी	अनन्तनाथ	सेही
शंभवनाथ	घोड़ा	धर्मनाथ	वज्रदण्ड
अभिनन्दननाथ	वंदर	शांतिनाथ	हरिण
सुमतिनाथ	चकवा	कुन्थुनाथ	वकरा
पद्मप्रभ	कमल	अरनाथ	मच्छ
सुपार्श्वनाथ	सांथिया	मल्लिनाथ	कलश
चन्द्रप्रभ	चन्द्रमा	मुनिसुव्रतनाथ	कछुवा
पुष्पदन्त	मगर	नमिनाथ	लालकमल
शीतलनाथ	कल्पवृक्ष	नेमिनाथ	शंख
श्रेयांशनाथ	गेंडा	पार्श्वनाथ	सर्प
वासुपूज्य	भैंसा	वर्द्धमान	सिंह

प्रश्नावली।

१ दशवें, पन्द्रहवें, बीसवें, और [illegible] तीर्थंकरके नाम चिह्न सहित बताओ।

२ ये चिह्न किन २ और कौन २ [illegible]रोंके हैं:— मगर, भैंसा, मच्छ, और कछुआ?

३ उन तीर्थङ्करोंके नाम बताओ, [illegible] निर्वाण [illegible]

४ ऐसे कौन २ तीर्थंकर हैं, [illegible] [illegible] नाम हैं?

५ हथियार, बाने, बरतन, और वृक्षके चिह्न किन २ तीर्थंकरोंके हैं ? अलग २ चिह्नसहित बताओ।

६ एक लड़केने चौबीसों तीर्थंकरोंके चिह्न देखनेके पश्चात् कहा कि कैसी अनोखी बात है कि सबके चिह्न जुदे २ हैं, किसीका भी किसी से नहीं मिलता, बताओ कि उसका कहना सत्य है या नहीं ?

७ क्या सब ही प्रतिमाओंपर चिह्न होते हैं ? जिस प्रतिमापर चिह्न न हो, उसे तुम किसकी कहोगे ?

८ यदि प्रतिमाओंपर चिह्न नहीं हों, तो क्या कठिनाई होगी ?

९ यदि अजितनाथ भगवानकी प्रतिमापरसे हाथीका चिह्न उड़ाकर गेंड़ेका चिह्न बना दिया जावे, तो बताओ उसे कौनसे भगवानकी प्रतिमा कहोगे ?

१० सांथियाका आकार बनाओ।

चौथा पाठ।

अभक्ष्य।

जिन पदार्थोंके खानेसे त्रसजीवोंका घात होता हो, अथवा बहुत स्थावर जीवोंका घात होता हो, जो प्रमाद बढ़ानेवाले हों, और जो अनिष्ट हों तथा अनुपसेव्य हों, वे सब अभक्ष्य हैं अर्थात् भक्षण करने योग्य नहीं हैं।

कमलकी डंडीके समान भीतरसे पोले पदार्थ जिनमें अनेक सूक्ष्म जीवोंका रहना संभव है और मुलेठी,

बेर, द्रोणपुष्प (एक प्रकारके वृक्षका फूल), ऊंवर, द्विदल आदिके खानेमें त्रस जीवोंका घात होता है।

मूली, गाजर, लहसुन, अदरक, शकरकंदी, आलू, अरवी (गागली, घुईयां) सूरण, तरबूज़, तुच्छ फल (जिसफलमें बीज न पड़े हों), बिलकुल अनन्तकाय वनस्पति आदि पदार्थोंके खानेमें अनन्त स्थावर जीवोंका घात होता है।

शराब, अफ़ीम, गांजा, भंग, चरस, तम्बाकू वगैरह प्रमाद बढ़ानेवाली चीजें हैं। भक्ष्य होनेपर भी जो हितकर न हों, उन्हें अनिष्ट कहते हैं। जैसे खांसीके रोगवालेको बरफ़ी हितकर नहीं है। जिनको उत्तम पुरुष बुरा समझें, उन्हें अनुपसेव्य कहते हैं। जैसे लार, मूत्र आदि पदार्थोंका सेवन। इनके अतिरिक्त नवनीत (मक्खन), सूखे उदुम्बर फल, चमड़ेमें रक्खे हुए हींग, घी, आदि पदार्थ, दो रातसे ज्यादहका संधान (आचार) मुरब्बा वगैरह कांजी, सब प्रकारके फूल, अजानफल, पुराने मूंग उड़द वगैरह द्विदलअन्न, वर्षा-ऋतुमें पत्तेवाले शाक और बिना दले हुए उड़द मूंग वगैरह द्विदल अन्न भी अभक्ष्य हैं। दही छांछ तथा

---

१ कच्चे दूधमें, कच्चे दहीमें, और कच्चे दूधके जमे हुए दहीकी छांछमें उड़द, मूंग, चना, आदि द्विदल (जिसके दो टुकड़े हो सकते हों) अन्नके मिलानेसे द्विदल बनता है।

विना फाड़ी विना देखी हुई सेम, राजमाप (रांसा) आदिकी फलीं वा सुपारी आदि भी अभक्ष्य हैं।

प्रश्नावली।

१ अभक्ष्य किसे कहते हैं? क्या सब ही शाक पात अभक्ष्य हैं? यदि कोई महाशय सब्जी मात्रका त्याग कर दें, परन्तु और सब चीज़ें खाते रहें तो बताओ वे अभक्ष्यके त्यागी हैं या नहीं?

२ अनिष्ट और अनुपसेव्यसे क्या समझते हो? प्रत्येकके दो उदाहरण दो।

३ द्विदल क्या होता है? क्या तमाम अनाज द्विदल हैं? यदि नहीं, तो कमसे कम चार द्विदल अनाजोंके नाम बताओ।

४ इनमें कौन २ अभक्ष्य हैं:—बैंगन, दहीवड़ा, पेड़ा, गोभी का फूल, आम, मक्खन, खीरा, कमलगट्टा, आलू, कचालू, सोंठ पालक, घी, गाजर, नीबूका अचार, बादाम चिरोंजीका रायता

५ कुछ ऐसे अभक्ष्य पदार्थोंके नाम बताओ जिनमें त्रस जीवों हिंसा होती हो।

६ अभक्ष्य कितने हैं? लोकमें जो बाईस अभक्ष्य प्रसिद्ध हैं उनके विपयमें तुम क्या जानते हो?

पांचवां पाठ।

अष्ट मूलगुण।

मूलगुण मुख्य गुणोंको कहते हैं। कोई भी पुरुष जब तक मूलगुण धारण नहीं करता है, तब तक श्रावक नहीं कहला सकता है। श्रावक बननेके लिए

इनको धारण करना अति आवश्यक है। मूल नाम जड़का है। जैसे जड़के विना वृक्ष नहीं ठहर सकता, उसी प्रकार विना मूलगुणोंके श्रावक नहीं हो सकता।

श्रावकके ये आठ मूलगुण हैं:—तीन मकारका त्याग अर्थात् मद्य त्याग, मांस त्याग, मधु त्याग और पांच उदुम्बर फलोंका त्याग।

१ शराव वगैरह मादक वस्तुओंके सेवन करनेका त्याग करना मद्यत्याग है। अनेक पदार्थोंको मिलाकर और उनको सड़ाकर शराव बनाई जाती है। इस कारणसे उसमें बहुत जल्दी असंख्याते जीव पैदा हो जाते हैं और उसके सेवन करनेमें महान् हिंसाका पाप लगता है। इसके अतिरिक्त उसको पीकर मनुष्य पागलसा हो जाता है। धर्म कर्म सब भूल जाता है, आपे परायेका विचार जाता रहता है और तो क्या शरावियोंके मुंहमें कुत्ते भी मूत जाते हैं। इस लिए शराव तथा भंग चरस वगैरह मादक वस्तुओंका त्याग करना ही उचित है।

२ मांस खानेका त्याग करना मांसत्याग कहलाता है। द्वीन्द्रिय आदि जीवोंके घात करनेसे मांस उत्पन्न होता है। मांसमें अनेक जीव सदा पैदा होते और मरते रहते हैं। मांसका स्पर्श करने मात्रसे वे

मर जाते हैं । अतएव जो मांस खाता है, वह अनंत जीवोंकी हिंसा करता है । इसके सिवाय मांसभक्षणसे अनेक प्रकारके असाध्य रोग पैदा होजाते हैं और स्वभाव क्रूर व कठोर हो जाता है । इस कारणसे मासका त्याग करना ही उचित है ।

३ शहद खानेका त्याग करना मधुत्याग है । शहद मक्खियोंका वमन (उगली) है । इसमें हर समय जीव उत्पन्न होते रहते हैं । बहुतसे लोग मक्खियोंके छत्तेको निचोड़कर शहद निकालते हैं । छत्तेके निचोड़नेमें उसमेंकी मक्खियां और उनके छोटे २ बच्चे मर-जाते हैं और उनका सारा रस शहदमें आजाता है जिसके देखने मात्रसे घृणा उत्पन्न होती है । ऐसी अपवित्र वस्तु खाने योग्य नहीं हो सकती । इसका त्याग करना ही उचित है ।

४–८ । बड़, पीपर, पाकर, कटूमर (अंजीर) और गूलर इन फलोंका त्याग करना पंच उदुम्बरोंका त्याग करना कहलाता है । इन फलोंमें छोटे २ अनेक जीव रहते हैं । बहुतोंमें साफ़ २ दिखाई पड़ते हैं और बहुतोंमें छोटे होनेसे दिखाई नहीं पड़ते । इन फलोंके खानेसे उनमें रहनेवाले सब जीव मर जाते हैं, इसलिए इनके खानेका त्याग करना ही उचित है ।

प्रश्नावली।

१ मूलगुण किसे कहते हैं और ये गुण किसके होते हैं ?

२ मूलगुण कितने होते हैं, नाम सहित बताओ।

३ एक जैनीने सर्वतया जीवहिंसाका त्याग कर दिया, तो बताओ ? अष्ट मूलगुणका धारी है या नहीं ?

४ मद्यसेवन करनेसे क्या २ हानियां हैं ? मांसका त्यागी मद्य और मधु सेवन करेगा या नहीं ?

५ क्या सब ही फलोंके खानेमें दोष है या केवल बड़, पीपर वगैरह फलोंमें ही ? और क्यों ?

६ अभक्ष्यका त्यागी मूलगुणका धारी है या नहीं ?

छट्ठा पाठ।

सप्तव्यसन।

व्यसन उन्हें कहते हैं, जो आत्माका स्वरूप ढक देवें तथा आत्माका कल्याण न होने देवें। बुरी आदतको भी व्यसन कहते हैं। व्यसन सेवन करनेवाले व्यसनी कहलाते हैं और लोकमें बुरी दृष्टिसे देखे जाते हैं।

व्यसन सात हैं—१ जूआ खेलना, २ मांस खाना, ३ मदिरा पान करना, ४ शिकार खेलना, ५ वेश्या गमन करना, ६ चोरी करना, और ७ परस्त्री सेवन करना।

१ रुपये पैसे और कौड़ियों वगैरहसे नक्की मूठ खेलना, और हार [illegible] रखते हुए शर्त

कर कोई काम करना, जूआ कहलाता है । जूआ खेलने वाले जुआरी कहलाते हैं । जुआरी लोगोंका हर जगह अपमान होता है । जातिके लोग उनकी निंदा करते हैं और राजा उन्हें दंड देता है ।

२ जीवोंको मारकर अथवा मरे हुए जीवोंका कलेवर खाना, मांस खाना कहलाता है । मांस खानेवाले हिंसक और निर्दई कहलाते हैं ।

३ शराब, भंग, चरस, गांजा वगैरह मादक वस्तुओंका सेवन करना, मदिरा पान कहलाता है । इनके सेवन करने वाले शराबी और नशेबाज़ कहलाते हैं । शराबियोंको धर्म कर्म और हेय उपादेयका कुछ भी विचार नहीं रहता । उनका ज्ञान और विचार शक्ति जाती रहती है । अन्य जनोंका तो क्या कहना घरके लोगों तकका उनपर विश्वास नहीं रहता ।

४ जंगलके रीछ, बाघ, सूअर, वगैरह स्वच्छंद फिरनेवाले जानवरोंको तथा उड़ते हुए छोटे २ पक्षियोंको अथवा और किसी जीवको बंदूक वगैरह हथियारोंसे मारना शिकार खेलना कहलाता है । इस दुष्ट कर्मके करनेवालोंको महान् पापका बंध होता है । इन पापियोंके हाथमें बंदूक वगैरह देखते ही जंगलके पशु भयभीत हो जाते हैं ।

५ वेश्यासे रमनेकी इच्छा करना, उसके घर आना जाना, अथवा उससे सम्बन्ध रखना, वेश्यागमन कहलाता है। वेश्या व्यभिचारिणी स्त्री होती है। उससे सम्बन्ध रखनेसे व्यभिचारका दोष लगता है। व्यभिचार करनेसे न केवल अशुभ कर्मोंका बंध होता है किन्तु अनेक प्रकारके दुःसाध्य रोग भी पैदा हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त वेश्या सेवन करनेसे माँबहिन सेवन करनेका पाप लगता है। वसंततिलका नामकी वेश्याके साथ विषय सेवन करनेसे एक ही भवमें १८ नातेकी कथा प्रसिद्ध है।

६ विना दिए हुए, प्रमादसे किसीकी गिरी हुई, या पड़ी हुई, या रक्खी हुई या भूली हुई वस्तुको स्वीकार कर लेना अथवा उठाकर किसीको दे देना चोरी है। जिसकी चीज़ चोरी चली जाती है, उसके मनमें बड़ा खेद पैदा होता है और इस खेदका कारण चोर होता है। इसके अतिरिक्त चोरी करते समय चोरके परिणाम भी बड़े मलीन होते हैं। इस कारण चोरके महान् अशुभ कर्मोंका बंध होता है। लोकमें भी चोर दण्ड पाते हैं और घृणाकी दृष्टिसे देखे जाते हैं।

७ अपनी स्त्री जिसका धर्मानुकूल पाणिग्रहण किया है, उसको छोड़कर शेष [illegible] माता वहिनके समान हैं। अपनेसे बड़ी म[illegible] है और छोटी वहिन

और बेटीके तुल्य है। उनके साथ विषय सेवन करना मानो अपनी माता बहिन और बेटीके साथ विषय सेवन करना है।

प्रश्नावली।

१ व्यसन किसे कहते हैं और ये व्यसन कितने होते हैं?

२ अष्ट मूल गुणोंका धारी और अभक्ष्यका त्यागी व्यसन सेवन करेगा या नहीं?

३ शतरंज, ताश गंजफा खेलना, रूई, अफीम वगैरहका सट्ट लगाना, लाटरी डालना, जीवनका बीमा करना, पार्टी बनाके कबड्डी, क्रिकेट, फुटबाल खेलना, जूआ है या नहीं?

४ परस्त्री और वेश्यामें क्या भेद है? परस्त्रीका त्यागी वेश्याका त्यागी है या नहीं?

५ मदिरा पानसे क्या समझते हो? भांग, चरस, गांजा मदिरामें शामिल हैं या नहीं?

६ एक अंग्रेजने जूनागढ़के जंगलमें एक बड़ा शेर मारा, बताओ उसको पुण्य हुआ या पाप? यदि पाप हुआ तो कौनसा?

७ वसंततिलका वेश्याकी कथा यदि याद हो, तो कहो। एक ही भवमें १८ नाते कैसे हुए?

८ सबसे बुरा व्यसन कौनसा है और ऐसे २ कौन २ व्यसन हैं जिनमें हिंसाका पाप लगता है।

९ परस्त्रीसेवन करनेसे माता बहिन सेवन करनेका पाप कैसे लगता है?

सातवाँ पाठ।

व्रत।

अच्छे कामोंके करनेका नियम करना अथवा बुरे कामोंको छोड़ना, यह व्रत कहलाता है।

ये व्रत १२ होते हैं:—अणुव्रत ५, गुणव्रत ३, शिक्षाव्रत ४, इनको उत्तरगुण भी कहते हैं। इनका पालनेवाला श्रावक कहलाता है।

अणुव्रत।

स्थूल रीतिसे अर्थात् हिंसादिक पांचों पापोंका एक देश त्याग करना अणुव्रत कहलाता है।[1]

ये अणुव्रत ५ होते हैं:—१ अहिंसाणुव्रत, २ सत्याणुव्रत, ३ अचौर्य्याणुव्रत, ४ ब्रह्मचर्याणुव्रत, और ५ परिग्रहपरिमाणाणुव्रत।

१ प्रमादसे संकल्पपूर्वक त्रस जीवोंका घात नहीं करना, अहिंसाणुव्रत है। अहिंसाणुव्रती मैं इस जीवको मारूं ऐसे संकल्पसे कभी किसी जीवका घात नहीं करता, न कभी किसी जीवके मारनेका चिंतवन करता है और न वचनसे कहता है कि तुम इसे मारो।

---

१ श्रावक स्थूल रीतिसे पापोंका त्याग करते हैं, इस कारण उनके अणुव्रत कहलाते हैं, मुनि पूर्णरीतिसे [illegible] त्याग करते हैं अतएव उनके महाव्रत कहलाते हैं।

२ स्थूल झूट न तो स्वयं बोलना, न दूसरे ... वाना और ऐसा सत्य भी नहीं बोलना जिसके से किसी जीवका अथवा धर्मका घात होता हो, सो सत्याणुव्रत है। ... वार्थ प्रमादसे जीवोंको पीड़ाकारक वचन नहीं

३ लोभादिक प्रमादके वश, विना दिए हुए की वस्तुको ग्रहण नहीं करना अचौर्याणुव्रत है। चौर्याणुव्रती दूसरेकी वस्तुको न तो स्वयं लेता है औ न उठाकर दूसरेको देता है।

४ परस्त्री सेवनका त्याग करना ब्रह्मचर्याणुव्रत है। ब्रह्मचर्याणुव्रती अपनी स्त्रीको छोड़कर अन्य सब स्त्रि योंको पुत्री और भगिनीके समान समझता है। कर्म किसीको बुरी दृष्टिसे नहीं देखता है।

५ अपनी इच्छानुसार धन धान्य, हाथी घोड़े, नौकर चाकर, बर्तन, कपड़े वग़ैरह परिग्रहका परिमाण कर लेना कि मैं इतना रक्खूंगा और शेषका त्याग देना, परिग्रहपरिमाणाणुव्रत है।

गुणव्रत।

गुणव्रत उन्हें कहते हैं, जो अणुव्रतोंका उपकार करें। गुणव्रत ३ हैं:—१ दिग्व्रत, २ देशव्रत, ३ अनर्थदंडव्रत।

१ लोभ, आरंभ वग़ैरहके त्यागके अभिप्रायसे पूर्वा-दिक चारों दिशाओंमें प्रसिद्ध नदी, ग्राम, नगर, पर्वता-

दिककी सीमा नियत करके जन्म पर्यंत उस सीमाके बाहर न जानेका नियम करना, दिग्व्रत कहलाता है जैसे किसी पुरुषने जन्मपर्यंत अपने आने जानेकी मर्यादा उत्तरमें हिमालय, दक्षिणमें कन्याकुमारी, पूर्वमें ब्रह्मदेश और पश्चिममें सिंधु नदी तक कर ली, अब वह जन्म पर्यंत इस सीमाके बाहर नहीं जायगा। वह दिग्व्रती है।

२ घड़ी, घंटा, दिन, महीना वग़ैरह नियत समय तक जन्म पर्यंत किए हुए दिग्व्रतमें और भी संकोच करके किसी ग्राम, नगर, घर, मोहल्ला वग़ैरह तक आना जाना रख लेना और उससे बाहर न जाना देशव्रत[1] है। जैसे जिस पुरुषने ऊपर लिखी सीमा नियत करके दिग्व्रत धारण किया है, वह यदि ऐसा नियम करलेवे कि मैं भादोंके महीनेमें जयपुर शहरके बाहर नहीं जाऊंगा अथवा आज इस मकानके बाहर नहीं जाऊंगा तो उसके देशव्रत समझना चाहिये।

३ विना प्रयोजन ही जिन कामोंमें पापका आरंभ हो, उन कामोंका त्याग करना, अनर्थदण्ड व्रत है। इस व्रतका धारी न कभी किसीको वनस्पति छेदने, ज़मीन खोदने वग़ैरह पापके कामोंका उपदेश देता है,

१ कहीं २ पर देशव्रतको शिक्षाव्रतोंमें लिया है और भोगोपभोग व्रतको दिग्व्रतोंमें।

न किसीको विष, शस्त्र वगैरह हिंसाके उपकरणोंको मांगे देता है, न कषाय उत्पन्न करनेवाली कथाएँ सुनता है, न किसीका बुरा चिंतवन करता है, औ न विना प्रयोजन जल बखेरने, आग जलाने वगैरहकी क्रियाएँ करता है। कुत्ता बिल्ली वगैरह घातक जीवोंको भी नहीं पालता।

शिक्षाव्रत।

शिक्षाव्रत उन्हें कहते हैं जिनसे मुनिव्रत पालने करनेकी शिक्षा मिले।

शिक्षाव्रत ४ हैं:—१ सामायिक, २ प्रोषधोपवास, ३ भोगोपभोगपरिमाण, ४ अतिथिसंविभाग।

१ मन, वचन, काय और कृत, कारित, अनुमोदना करके नियत समय तक पांचों पापोंका त्याग करना और सबसे रागद्वेष छोड़कर, अपने शुद्ध आत्मस्वरूपमें लीन होना, सामायिक कहलाता है। सामायिक करने-वालेको प्रातःकाल और सायंकाल किसी उपद्रवरहित एकांत स्थानमें तथा घर, धर्मशाला अथवा मंदिरमें आसन वगैरह ठीक करके सामायिक करना चाहिए और सामायिक करते समय ऐसा विचार करना चाहिए कि यह संसार जिसमें मैं रहताहूं अशरणरूप, अशुभ-रूप अनित्य, दुःखमयी और पररूप है और मोक्ष उससे है इत्यादि।

(ङ) पंचाणुव्रतका पालनेवाला कौनसी प्रतिमाका धारी है ?

(च) अहिंसाणुव्रतका धारी लड़ाईमें जाकर लड़ेगा या नहीं ? र, कुवा, तालाव वनवायगा या नहीं, खेती करेगा या नहीं ?

(छ) छपी हुई पुस्तकें बांटना, अंग्रेजी तथा शिल्पविद्याके ए रुपया देना ज्ञानदान है या नहीं ?

(ज) गुणव्रत तथा शिक्षाव्रत विना अणुव्रतके हो सकते हैं नहीं ? क्या शिक्षाव्रती अणुव्रती हैं ?

(झ) एक पुरुषने यह नियम किया कि मैं एशिया, योरुप, रीका, अमरीका, आस्ट्रेलिया अर्थात् पंच महाद्वीपोंके वाहर न ऊंगा, तो वताओ उसका यह दिग्व्रत है या नहीं ?

(ञ) एक पंडित महाशय विना कुछ लिए दिए विद्यार्थियोंको ते हैं, तो वताओ वे कौनसा व्रत पाल रहे हैं ?

(ट) मिथ्यात्वका नाश करने और ज्ञानका प्रकाश करनेके र अकलंकने आपत्ति पड़नेपर झूठ बोलकर अपने प्राणोंकी रक्षा ाओ उन्हें झूठका पाप लगा या नहीं ?

) सड़कपर एक पैसा पड़ा था, हरिने उठाकर एक दे दिया, वताओ हरिने अच्छा किया या बुरा ?

क मालूम है कि अपराधीको फांसीकी सज़ा मिले- उसके प्राण नहीं वच सकते, उसको वचानेके ना अच्छा है या बुरा ?

सदा अपने कटु शब्दोंसे अपने पतिका ताओ वह कौनसा पाप करती है ?

ना सव रुपया हार जानेके वाद घर

मुनि आदि श्रेष्ठ पुरुषोंको दान देना, अतिथिसंविभाग व्रत है। दान चार प्रकारका है:—१ आहारदान, २ ज्ञानदान, ३ औषधिदान, ४ अभयदान।

१ मुनि, त्यागी, श्रावक, व्रती तथा भूखे अनाथ-विधवाओंको भोजन देना आहारदान है।

२ पुस्तकें बांटना, पाठशालाएँ खोलना, ज्ञानदान है।

३ रोगी पुरुषोंको औषधि देना, औषधिदान है।

४ जीवोंकी रक्षा करना अथवा मुनि त्यागी और ब्रह्मचारी लोगोंके रहनेके लिए स्थान बनवाना, अंधेरी रातमें सड़कोंपर लेम्प जलवाना, चौकी पहरा रखवाना, अभयदान है।

प्रश्नावली।

१ व्रत किसे कहते हैं? व्रतोंके कितने भेद हैं?

२ अणुव्रत, महाव्रत, भोग, उपभोग, यम, नियम, दिग्व्रत देशव्रत, और प्रोषध, उपवास, प्रोषधोपवासमें क्या अंतर है उदाहरण देकर समझाओ।

३ निम्नलिखित प्रश्नोंके उत्तर दो:—

(क) प्रोषधोपवासके दिन क्या क्या करना चाहिए?

(ख) ग्यारहवीं प्रतिमा धारीके व्रत अणुव्रत हैं या महाव्रत

(ग) सामायिक कहां और किस समय करनी चाहिए औ सामायिक करते समय क्या विचार करना चाहिए?

(घ) अनर्थदण्डव्रतका धारी ऐसी पुस्तक पढ़ेगा व सुनेगा य नहीं जिसमें जीवहिंसा और युद्धका कथन हो?

(ङ) पंचाणुव्रतका पालनेवाला कौनसी प्रतिमाका धारी है ?

(च) अहिंसाणुव्रतका धारी लड़ाईमें जाकर लड़ेगा या नहीं? मंदिर, कुवा, तालाव बनवायगा या नहीं, खेती करेगा या नहीं ?

(छ) छपी हुई पुस्तकें बांटना, अंग्रेज़ी तथा शिल्पविद्याके लिए रुपया देना ज्ञानदान है या नही ?

(ज) गुणव्रत तथा शिक्षाव्रत विना अणुव्रतके हो सकते हैं या नहीं ? क्या शिक्षाव्रती अणुव्रती हैं ?

(झ) एक पुरुषने यह नियम किया कि मैं एशिया, यौरुप, अफ़रीका, अमरीका, आस्ट्रेलिया अर्थात् पंच महाद्वीपोंके बाहर न जाऊंगा, तो बताओ उसका यह दिग्व्रत है या नहीं ?

(ञ) एक पंडित महाशय विना कुछ लिए दिए विद्यार्थियोंको पढ़ाते हैं, तो बताओ वे कौनसा व्रत पाल रहे हैं ?

(ट) मिथ्यात्वका नाश करने और ज्ञानका प्रकाश करनेके लिए अकलंकने आपत्ति पड़नेपर झूठ बोलकर अपने प्राणोंकी रक्षा की, बताओ उन्हें झूठका पाप लगा या नहीं ?

(ठ) सड़कपर एक पैसा पड़ा था, हरिने उठाकर एक भिखारीको दे दिया, बताओ हरिने अच्छा किया या बुरा ?

(ड) साफ़ मालूम है कि अपराधीको फांसीकी सज़ा मिलेगी, किसी सूरतसे उसके प्राण नहीं बच सकते, उसको बचानेके लिए झूठी गवाही देना अच्छा है या बुरा ?

(ढ) एक दुष्ट स्त्री सदा अपने कटु शब्दोंसे अपने पतिका जी दुखाती रहती है, बताओ वह कौनसा पाप करती है ?

(ण) एक जुवारी अपना सब रुपया हार जानेके बाद घर

मुनि आदि श्रेष्ठ पुरुषोंको दान देना, अतिथिसंविभाग व्रत है। दान चार प्रकारका हैः—१ आहारदान, २ ज्ञानदान, ३ औषधिदान, ४ अभयदान।

१ मुनि, त्यागी, श्रावक, व्रती तथा भूखे अनाथ-विधवाओंको भोजन देना आहारदान है।

२ पुस्तकें बांटना, पाठशालाएँ खोलना, ज्ञानदान है।

३ रोगी पुरुषोंको औषधि देना, औषधिदान है।

४ जीवोंकी रक्षा करना अथवा मुनि त्यागी और ब्रह्मचारी लोगोंके रहनेके लिए स्थान बनवाना, अंधेरी रातमें सड़कोंपर लेम्प जलवाना, चौकी पहरा रखवाना, अभयदान है।

प्रश्नावली।

१ व्रत किसे कहते हैं? व्रतोंके कितने भेद हैं?

२ अणुव्रत, महाव्रत, भोग, उपभोग, यम, नियम, दिग्व्रत, देशव्रत, और प्रोषध, उपवास, प्रोषधोपवासमें क्या अंतर है? उदाहरण देकर समझाओ।

३ निम्नलिखित प्रश्नोंके उत्तर दोः—

(क) प्रोषधोपवासके दिन क्या क्या करना चाहिए?

(ख) ग्यारहवीं प्रतिमा धारीके व्रत अणुव्रत हैं या महाव्रत?

(ग) सामायिक कहां और किस समय करनी चाहिए और सामायिक करते समय क्या विचार करना चाहिए?

(घ) अनर्थदण्डव्रतका धारी ऐसी पुस्तक पढ़ेगा व सुनेगा या नहीं जिसमें जीवहिंसा और युद्धका कथन हो?

(ङ) पंचाणुव्रतका पालनेवाला कौनसी प्रतिमाका धारी है ?

(च) अहिंसाणुव्रतका धारी लड़ाईमें जाकर लड़ेगा या नहीं ? मंदिर, कुवा, तालाव बनवायगा या नहीं, खेती करेगा या नहीं ?

(छ) छपी हुई पुस्तकें बांटना, अंग्रेज़ी तथा शिल्पविद्याके लिए रुपया देना ज्ञानदान है या नहीं ?

(ज) गुणव्रत तथा शिक्षाव्रत विना अणुव्रतके हो सकते हैं या नहीं ? क्या शिक्षाव्रती अणुव्रती हैं ?

(झ) एक पुरुषने यह नियम किया कि मैं एशिया, योरुप, अफ़रीका, अमरीका, आस्ट्रेलिया अर्थात् पंच महाद्वीपोंके बाहर न जाऊंगा, तो बताओ उसका यह दिग्व्रत है या नहीं ?

(ञ) एक पंडित महाशय विना कुछ लिए दिए विद्यार्थियोंको पढ़ाते हैं, तो बताओ वे कौनसा व्रत पाल रहे हैं ?

(ट) मिथ्यात्वका नाश करने और ज्ञानका प्रकाश करनेके लिए अकलंकने आपत्ति पड़नेपर झूठ बोलकर अपने प्राणोंकी रक्षा की, बताओ उन्हें झूठका पाप लगा या नहीं ?

(ठ) सड़कपर एक पैसा पड़ा था, हरिने उठाकर एक भिखारीको दे दिया, बताओ हरिने अच्छा किया या बुरा ?

(ड) साफ़ मालूम है कि अपराधीको फांसीकी सज़ा मिलेगी, किसी सूरतसे उसके प्राण नहीं बच सकते, उसको बचानेके लिए झूठी गवाही देना अच्छा है या बुरा ?

(ढ) एक दुष्ट स्त्री सदा अपने कटु शब्दोंसे अपने पतिका जी दुखाती रहती है, बताओ वह कौनसा पाप करती है ?

(ण) एक [illegible] सब रुपया हार जानेके

आकर अपनी स्त्रीसे कहने लगा कि यदि तुम्हारे पास कुछ रुपया हो तो दे दो। यद्यपि स्त्रीके पास रुपया था, परंतु जुवेके कारण उसने कह दिया कि मेरे पास तो एक फूटी कौड़ी भी नहीं, मैं कहांसे दूं? बताओ उसने झूठ बोला या सच?

४ अतिथि-संविभागव्रत, अनर्थदण्डव्रत, और परिग्रहपरिमाणाणुव्रतसे क्या समझते हो? उदाहरणसहित बताओ।

आठवाँ पाठ।

ग्यारह प्रतिमा।

श्रावकोंके ११ दरजे होते हैं, उन्हें ग्यारह प्रतिमा कहते हैं। श्रावक उन्नति करता हुआ एकसे दूसरी, दूसरीसे तीसरी, तीसरीसे चौथी, इसी तरह ग्यारहवीं प्रतिमा तक चढ़ता है और उससे ऊपर चढ़कर साधु या मुनि कहलाता है। अगली २ प्रतिमाओंमें पूर्वकी प्रतिमाओंकी क्रियाका होना भी जरूरी है।

१ दर्शन प्रतिमा—सम्यग्दर्शन सहित अष्ट मूल गुणका धारण करना और सप्त व्यसनका त्याग करना दर्शन प्रतिमा है। इस प्रतिमाका धारी दार्शनिक श्रावक कहलाता है। यह सदा संसारसे उदासीन, दृढ़चित्त और शुभ फलकी वांछारहित रहता है।

२ व्रत प्रतिमा—पांच अणुव्रत, तीन गुणव्रत, चार शिक्षाव्रत, इन १२ व्रतोंका पालना व्रत प्रतिमा है। इस प्रतिमाका धारी व्रती श्रावक कहलाता है।

३ सामायिक प्रतिमा—प्रतिदिन प्रातःकाल, मध्याह्नकाल और सायंकाल अर्थात् सवेरे, दुपहर और शामको छह २ घड़ी विधिपूर्वक निरतिचार सामायिक करना सामायिक प्रतिमा है।

४ प्रोषध प्रतिमा—प्रत्येक अष्टमी और चतुर्दशीको १६ पहरका अतिचाररहित उपवास अर्थात् प्रोषधोपवास करना और गृह, व्यापार भोग उपभोगकी समस्त सामग्रीका त्यागकरके एकांतमें बैठकर धर्मध्यानमें लगना, प्रोषध प्रतिमा है।

५ सचित्तत्याग प्रतिमा—हरी वनस्पति अर्थात् कच्चे फल फूल बीज पत्ते वगैरहको न खाना सचित्तत्याग प्रतिमा है। जिसमें जीव होते हैं उसे सचित्त कहते हैं। अतएव जीवसहित पदार्थको न खाना सचित्तत्याग प्रतिमा है।

६ रात्रिभोजनत्याग प्रतिमा—कृतकारित अनुमो-

---

१ सामायिक करनेकी विधि यह है—प्रथम पूर्वकी दिशाकी ओर मुंह करके खड़ा होकर तीन आवर्त्त और एक नमस्कार करे और फिर क्रमसे दक्षिण पश्चिम, और उत्तर दिशाकी ओर तीन २ आवर्त्त और एक २ नमस्कार करे। अनंतर पूर्वकी दिशाकी ओर मुखकर खड़े होकर अथवा बैठकर मन वचन कायको शुद्ध करके पांचों पापोंका त्याग करे, सामायिकपाठ पढ़े, किसी मंत्रका जाप करे अथवा भगवानकी शांत-मुद्राका या चैतन्य मात्र शुद्ध स्वरूपका अथवा कर्मके उदयके रसकी जातिका चिंतवन करे। सामायिकका उत्कृष्ट समय ६ [illegible] घड़ी और जघन्य २ घड़ी है। २४ मिनटकी एक घड़ी [illegible]

दनासे और मन वचन कायसे रात्रिमें हरएक प्रकारके आहारका त्याग करना अर्थात् सूर्यास्तसे २ घड़ी पहलेसे सूर्योदयसे २ घड़ी पीछे तक आहार पानीका सर्वथा त्याग करना, रात्रिभोजनत्याग प्रतिमा है।

कहीं २ पर इस प्रतिमाका नाम दिवामैथुन त्याग प्रतिमा भी है अर्थात् दिनमें मैथुनका त्याग करना।

७ ब्रह्मचर्य प्रतिमा—मन वचन कायसे स्त्री मात्रका त्याग करना, ब्रह्मचर्य प्रतिमा है।

८ आरंभत्याग प्रतिमा—मन वचन कायसे और कृत कारित अनुमोदनासे गृहकार्यसम्बन्धी सर्व प्रकारकी क्रियाओंका त्याग करना, आरम्भत्याग प्रतिमा है। आरम्भत्याग प्रतिमावाला स्नान दान पूजन वगैरह कर सकता है।

९ परिग्रहत्यागप्रतिमा—धन धान्यादिक परिग्रहको पापका कारण रूप जानते हुए आनंदसे उनको छोड़ना परिग्रहत्याग प्रतिमा है।

१० अनुमतित्यागप्रतिमा—गृहस्थाश्रमके किसी भी कार्यकी अनुमोदना नहीं करना, अनुमतित्याग प्रतिमा है। इस प्रतिमाका धारी उदासीन होकर घरमें या चैत्यालय या मठ वगैरहमें बैठता है। घरका या अन्य जो कोई श्रावक भोजनको बुलावे, उसके यहां भोजन

कर आता है किंतु अपने मुखसे यह नहीं कहता कि, हमारे वास्ते अमुक वस्तु बनाओ ।

११ उद्दिष्टत्याग प्रतिमा—घर छोड़कर वन तथा मठ आदिकमें तपश्चरण करते हुए रहना, खंडवस्त्र धारण करना, याचनारहित भिक्षावृत्तिसे योग्य उचित आहार लेना, उद्दिष्टत्याग प्रतिमा है । इस प्रतिमा धारीके दो भेद हैं:—१ क्षुल्लक २ ऐलक । क्षुल्लक आधी चादर रखते हैं पर ऐलक लंगोटी मात्र रखते हैं ।

प्रश्नावली ।

१ प्रतिमा किसे कहते हैं और इसके कितने भेद हैं, नाम-सहित बताओ । भगवानकी मूर्तिको भी प्रतिमा कहते हैं, बतलाओ उक्त प्रतिमा शब्दका इससे कुछ सम्बन्ध है या नहीं ?

२ प्रतिमाओंका पालन कौन करता है ? और किसी प्रतिमाके पालन करनेके लिए उससे पूर्वकी प्रतिमाओंका पालन करना आवश्यक है या नहीं ?

३ एक व्यक्ति अभीतक किसी भी प्रतिमाका पालन नहीं करता था परंतु अब उसने पहली प्रतिमा धारण कर ली, तो बताओ उसने पहलेसे क्या उन्नति की ?

४ निम्नलिखित कौन प्रतिमाओंके धारी हैं ? ब्रह्मचारी, पर्वके दिन प्रोषधोपवास करनेवाला, घरका कोई भी काम न करके तमाम दिन धर्मध्यान करनेवाला, स्त्री मात्रका त्याग करने वाला, एक लंगो[illegible] किसी प्रकारका परिग्रह न रखनेवाला

दनासे और मन वचन कायसे रात्रिमें हरएक प्रकारके आहारका त्याग करना अर्थात् सूर्यास्तसे २ घड़ी पहलेसे सूर्योदयसे २ घड़ी पीछे तक आहार पानीका सर्वथा त्याग करना, रात्रिभोजनत्याग प्रतिमा है।

कहीं २ पर इस प्रतिमाका नाम दिवामैथुन त्याग प्रतिमा भी है अर्थात् दिनमें मैथुनका त्याग करना।

७ ब्रह्मचर्य प्रतिमा—मन वचन कायसे स्त्री मात्रका त्याग करना, ब्रह्मचर्य प्रतिमा है।

८ आरंभत्याग प्रतिमा—मन वचन कायसे और कृत कारित अनुमोदनासे गृहकार्यसम्बन्धी सर्व प्रकारकी क्रियाओंका त्याग करना, आरम्भत्याग प्रतिमा है। आरम्भत्याग प्रतिमावाला स्नान दान पूजन वगैरह कर सकता है।

९ परिग्रहत्यागप्रतिमा—धन धान्यादिक परिग्रहको पापका कारण रूप जानते हुए आनंदसे उनको छोड़ना परिग्रहत्याग प्रतिमा है।

१० अनुमतित्यागप्रतिमा—गृहस्थाश्रमके किसी भी कार्यकी अनुमोदना नहीं करना, अनुमतित्याग प्रतिमा है। इस प्रतिमाका धारी उदासीन होकर घरमें या चैत्यालय या मठ वगैरहमें बैठता है। घरका या अन्य जो कोई श्रावक भोजनको बुलावे, उसके यहां भोजन

(ज) जिस स्थानपर कोई जैनी न हो तथा जैनमंदिर न हो, वहां प्रतिमाधारी रहेगा या नहीं ?

(झ) सामायिककी क्या विधि है, इसका करना कौनसी प्रतिमाधारीके लिए आवश्यक है ?

(ञ) सचित्त किसे कहते हैं ? कच्चे फल फूल सचित्त हैं या नहीं ?

(ट) दूसरी प्रतिमाका धारी रातको भोजन करेगा या नहीं ? यदि नहीं तो छठी प्रतिमा 'रात्रिभोजन त्याग' क्यों रक्खी है ?

(ठ) सातवीं प्रतिमाधारी मनुष्य क्या २ काम करेगा और क्या २ नहीं करेगा ?

(ड) ग्यारहवीं प्रतिमाधारी श्रावक है या मुनि ? उसके पास क्या २ वस्तुएँ होती हैं ?

नवाँ पाठ ।

तत्त्व और पदार्थ ।

तत्त्व सात होते हैं:—१ जीव, २ अजीव, ३ आस्रव, ४ बंध, ५ संवर, ६ निर्जरा, ७ मोक्ष ।

जीव ।

जीव उसे कहते हैं, जो जीये, जिसमें चेतना हो अथवा प्राणोंको धारण करे । पांच इन्द्रिय, तीन बल (मनबल, बचनबल, कायबल), आयु और श्वासोच्छ्वास, ये दश द्रव्यप्राण तथा ज्ञान दर्शन थे

५ य ऊंचीसे ऊंची कौनसी प्रतिमाओंका पालन कर सकते हैं:–गृहस्थ, स्त्री, पुरुष, पशु, पक्षी।

६ कोट बूट पतलून पहिनते हुए, सौदागरी करते हुए, विकालत, अध्यापकी, वैद्यक, ज्योतिष, सम्पादकी करते हुए, राज्य और न्याय करते हुए, कौनसी प्रतिमाका पालन हो सकता है?

७ निम्न लिखित प्रश्नोंके उत्तर दो:–

(क) सातवीं प्रतिमाधारी स्त्रियोंके समूहमें खड़ा होकर व्याख्यान दे सकता है या नहीं?

(ख) दशवीं प्रतिमाधारीको यदि कोई भोजनका निमंत्रण दे, तो उसके यहां जाय या नहीं?

(ग) ग्यारहवीं प्रतिमाधारी पाठशाला खुलवा सकता है या नहीं? उसके लिए रुपया देनेकी अनुमोदना करेगा या नहीं तथा रेल, घोड़े, गाड़ी वगैरहमें बैठेगा या नहीं?

(घ) आठवीं प्रतिमाका धारी मंदिर बनानेकी सलाह देगा या नहीं? तथा पूजन करेगा या नहीं?

(ङ) उद्दिष्टत्याग प्रतिमाधारी किसीसे धर्मपुस्तक अर्थात शास्त्रके लिए याचना करेगा या नहीं,? कोई पुस्तक लिखेगा या नहीं? रोग हो जाने पर किसीसे उसका ज़िकर करेगा या नहीं?

(च) दूसरी प्रतिमाधारीके लिए तीनों समय सामायिक करना आवश्यक है या नहीं?

(छ) प्लेग आजानेपर पहली प्रतिमाका धारी प्लेगग्रसित स्थानको छोड़ेगा या नहीं अथवा किसी सम्बन्धीकी मृत्युपर रोयगा या नहीं?

(ञ) जिस स्थानपर कोई जैनी न हो तथा जैनमंदिर न हो, वहां प्रतिमाधारी रहेगा या नहीं ?

(झ) सामायिककी क्या विधि है, इसका करना कौनसी प्रतिमाधारीके लिए आवश्यक है ?

(ञ) सचित्त किसे कहते हैं ? कच्चे फल फूल सचित्त हैं या नहीं ?

(ट) दूसरी प्रतिमाका धारी रातको भोजन करेगा या नहीं ? यदि नहीं तो छठी प्रतिमा 'रात्रिभोजन त्याग' क्यों रक्खी है ?

(ठ) सातवीं प्रतिमाधारी मनुष्य क्या २ काम करेगा और क्या २ नहीं करेगा ?

(ड) ग्यारहवीं प्रतिमाधारी श्रावक है या मुनि ? उसके पास क्या २ वस्तुएँ होती हैं ?

नवाँ पाठ ।

तत्त्व और पदार्थ ।

तत्त्व सात होते हैं:—१ जीव, २ अजीव, ३ आस्रव, ४ बंध, ५ संवर, ६ निर्जरा, ७ मोक्ष ।

जीव ।

जीव उसे कहते हैं, जो जीवे, जिसमें चेतना हो अथवा प्राणोंको धारण करे । पांच इन्द्रिय, तीन बल (मनबल, वचनबल, कायबल), आयु और श्वासोच्छ्वास, ये दश द्रव्यप्राण तथा ज्ञान दर्शन ये भाव-

प्राण हैं। इनको धारण करनेवाले जीव[1] कहलाते हैं। जैसे मनुष्य, देव, पशु, पक्षी वगैरह।

अजीव।

अजीव[2] उसे कहते हैं जिसमें चेतना गुण न हो अथवा जिसमें कोई प्राण न हो जैसे लकड़ी पत्थर वगैरह।

आस्रव।

आस्रव बंधके कारणको कहते हैं। इसके २ भेद हैं:—१ भावास्रव, २ द्रव्यास्रव। जैसे किसी नावमें कोई छेद हो जाय और उसके द्वारा उस नावमें पानी आने लगे, इसी प्रकार आत्माके जिन परिणामों द्वारा कर्म आते हैं उन्हें भावास्रव कहते हैं और शुभ अशुभ पुद्गल परमाणुओंके कर्मरूप होनेको द्रव्यास्रव कहते हैं।

आस्रवके मुख्य ४ भेद हैं:—१ मिथ्यात्व, २ अविरति, ३ कषाय, ४ योग। कर्मोंकी उत्पत्तिके ये ही चार मुख्य कारण हैं।

---

१ एकइंद्रिय जीवमें स्पर्शन इन्द्रिय, आयु, कायबल और श्वासोच्छ्वास, ये चार प्राण होते हैं। दोइन्द्रिय जीवमें रसना इन्द्रिय और वचन बल मिलकर ६ प्राण होते हैं। तेइन्द्रिय जीवमें नासिका इन्द्रिय बढ़कर सात प्राण है। चौइन्द्रिय जीवमें चक्षु इन्द्रिय बढ़कर आठ प्राण हैं। पंचेन्द्रिय असैंनी जीवमें कर्ण इन्द्रिय बढ़कर ९ प्राण हैं। पंचेन्द्रिय सैंनीजीवमें मन मिलाकर पूरे दश प्राण होते हैं। २ अजीवके पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, काल, ५ भेद हैं जिनका कथन तीसरे भागमें आचुका है।

१ मिथ्यात्व—पर पदार्थोंसे राग द्वेषरहित अपनी आत्माके अनुभवनमें श्रद्धान होनेको सम्यक्त्व कहते । यही आत्माका निज भाव है, इसके विपरीत वको मिथ्यात्व कहते हैं। मिथ्यात्वके कारण संसारी वमें अनेक भाव पैदा होते हैं और इसीसे यह कर्म त्रका कारण है। इसके ५ भेद हैं:—१ एकांत, विपरीत, ३ विनय, ४ संशय, ५ अज्ञान ।

२ अविरति—आत्माके निज स्वभावसे विमुख होकर ाह्य विषयोंमें लगना अविरति है। षटकायके जीवोंकी हिंसा करना तथा पांच इन्द्रिय और मनको वशमें हीं करना अविरति है।

३ कषाय—जो आत्माको कषे अर्थात् दुःख दे, वह कषाय है। इसके २५ भेद हैं:—अनंतानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ; अप्रत्याख्यान क्रोध, मान, माया, लोभ; प्रत्याख्यान क्रोध, मान, माया, लोभ; संज्वलन क्रोध, मान, माय, लोभ; हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुंवेद, नपुंसकवेद ।

---

१ वस्तुमें रहनेवाले अनेक गुणोंका विचार न करके उसका एक ही रूप श्रद्धान करना एकांत मिथ्यात्व है। २ उलटा श्रद्धान करना विपरीत मिथ्यात्व है। ३ सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्रकी अपेक्षा न करके सबका समान विनय करना, विनय मिथ्यात्व है। ४ पदार्थोंके स्वरूपमें संशय रहना संशय मिथ्यात्व है। ५ हिताहितकी परीक्षारहित श्रद्धान करना अज्ञान है। ६ कषायोंका विशेष कथन आगे कर्म प्रकृतियोंमें किया

४ योग—मनमें किसी प्रकारके [illegible]
या वचन बोलनेसे या शरीरके [illegible]
मन, जिह्वा व शरीरमें हलन चलन [illegible]
इनके हिलनेसे हमारी आत्मा भी हिलती है
योग कहलाता है। आत्माके हलन चलन
कर्मोंका आस्रव होता है। योग के १५
सत्य मनोयोग, असत्य मनोयोग, उभय
अनुभय मनोयोग, सत्यवचनयोग,
उभय वचनयोग, अनुभय वचनयोग, औ[illegible]
योग, औदारिक मिश्र काययोग, वैक्रियक
आहारक काययोग, आहारक मिश्रकाययोग,
योग।

इस प्रकार ५ मिथ्यात्व, १२ अविरत, [illegible]
१५ योग कुल मिलाकर आस्रवके ५७ भेद [illegible]

द्वारा कर्म आते हैं और वे आत्माके प्रदेशोंके साथ मिल जाते हैं। जैसे धूल उड़कर कपड़ेमें लग जाती है। बंध आस्रव पूर्वक ही होता है, इस लिए जितने आस्रव हैं, वे सब बंधके कारण समझना चाहिए।

संवर।

आस्रवका न होना अथवा आस्रवका रोकना, अर्थात् नवीन कर्मोको पैदा न होने देना संवर कहलाता है।

जैसे जिस नावमें छिद्र हो जानेसे पानी आने लगा था यदि उस नावके छिद्र बंद कर दिए जाएँ तो उसमें पानी आना बंद हो जायगा, इसी प्रकार जिन परिणामोंसे कर्म आते हैं वे न होने पावें और उनके स्थानमें विपरीत परिणाम हों, तो कर्मोका आना बंद हो जायगा, यही संवर है। इसके भी भावसंवर और द्रव्यसंवर दो भेद हैं। जिन परिणामोंसे आस्रव नहीं होता है वे भावसंवर कहलाते हैं और उनसे जो पुद्गल परमाणु कर्मरूप नहीं होते हैं उसको द्रव्यसंवर कहते हैं।

यह संवर ३ गुप्ति, ५ समिति, १० धर्म, १२ प्रेक्षा, २२ परीषहजय और ५ च [illegible]

४ योग—मनमें किसी प्रकारका चिंतवन करनेसे या वचन बोलनेसे या शरीरसे कोई कार्य करनेसे हमारे मन, जिह्वा व शरीरमें हलन चलन होता है और इनके हिलनेसे हमारी आत्मा भी हिलती है । यही योग कहलाता है । आत्मामें हलन चलन होनेसे ही कर्मोंका आस्रव होता है । योग के १५ भेद हैं:—सत्य मनोयोग, असत्य मनोयोग, उभय मनोयोग, अनुभय मनोयोग, सत्यवचनयोग, असत्यवचनयोग, उभय वचनयोग, अनुभय वचनयोग, औदारिक काययोग, औदारिक मिश्र काययोग, वैक्रियक काययोग, आहारक काययोग, आहारक मिश्रकाययोग, कार्माणयोग ।

इस प्रकार ५ मिथ्यात्व, १२ अविरत, २५ कषाय, १५ योग कुल मिलाकर आस्रवकें ५७ भेद हैं ।

बंध ।

बंधके भी दो भेद हैं:—१ भावबंध, २ द्रव्यबंध। आत्माके जिन विकारभावोंसे कर्मबंध होता है, उसको तो भावबंध कहते हैं और उन विकार भावोंके कारण कर्मके पुद्गल परमाणुओंका आत्माके प्रदेशोंके साथ दूध और पानीके समान परस्पर मिल जाना, द्रव्यबंध कहलाता है । मिथ्यात्व, अविरत आदि परिणामोंके

द्वारा कर्म आते हैं और वे आत्माके प्रदेशोंके साथ मिल जाते हैं। जैसे धूल उड़कर कपड़ेमें लग जाती है।

बंध आस्रव पूर्वक ही होता है, इस लिए जितने आस्रव हैं, वे सब बंधके कारण समझना चाहिए।

संवर।

आस्रवका न होना अथवा आस्रवका रोकना, अर्थात् नवीन कर्मोंको पैदा न होने देना संवर कहलाता है।

जैसे जिस नावमें छिद्र हो जानेसे पानी आने लगा था यदि उस नावके छिद्र बंद कर दिए जाएँ तो उसमें पानी आना बंद हो जायगा, इसी प्रकार जिन परिणामोंसे कर्म आते हैं वे न होने पावें और उनके स्थानमें विपरीत परिणाम हों, तो कर्मोंका आना बंद हो जायगा, यही संवर है। इसके भी भावसंवर और द्रव्यसंवर दो भेद हैं। जिन परिणामोंसे आस्रव नहीं होता है वे भावसंवर कहलाते हैं और उनसे जो पुद्गल परमाणु कर्मरूप नहीं होते हैं उसको द्रव्यसंवर कहते हैं।

यह संवर ३ गुप्ति, ५ समिति, १० धर्म, १२ अनुप्रेक्षा, २२ परीषहजय और ५ चारित्रसे होता है अर्थात् संवरके गुप्ति, समिति, अनुप्रेक्षा, परीषहजय, चारित्र ये ५ मुख्य भेद हैं।

गुप्ति—मन, वचन और कायकी क्रियाओंका रोकना, ये तीन गुप्ति हैं।

समिति—ईर्या, भाषा, एषणा, आदाननिक्षेपण, उत्सर्ग, ये ५ समिति हैं।

धर्म—उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य, ये १० धर्म हैं।

अनुप्रेक्षा—बारबार चिंतवन करनेको अनुप्रेक्षा कहते हैं। अनित्य, अशरण, संसार, एकत्व, अन्यत्व, अशुचि, आस्रव, संवर, निर्जरा, लोक, बोधिदुर्लभ, धर्म, ये १२ अनुप्रेक्षा हैं। इनको १२ भावना भी कहते हैं।

१ अनित्यभावना—ऐसा चिंतवन करना कि संसारकी तमाम चीज़ें नाश हो जानेवाली हैं, कोई भी नित्य नहीं है।

२ अशरणभावना—ऐसा चिंतवन करना कि जगतमें कोई शरण नहीं है और मरणसे कोई बचानेवाला नहीं है।

३ संसारभावना—ऐसा चिंतवन करना कि यह संसार असार है, इसमें ज़रा भी सुख नहीं है।

४ एकत्वभावना—ऐसा विचार करना कि अपने

---

५ समिति और १० धर्मोंका स्वरूप पहले दिया जा चुका है।

अच्छे बुरे कर्मोंके फलको यह जीव अकेला ही भोगता है, कोई सगा साथी नहीं बटा सकता।

५ अन्यत्वभावना—ऐसा विचार करना कि पुत्र स्त्री वगैरह संसारकी कोई भी वस्तु अपनी नहीं है।

६ अशुचिभावना—ऐसा विचार करना कि यह देह अपवित्र और अपावन है, इससे कैसे प्रीति करना चाहिए ?

७ आस्रवभावना—ऐसा चिंतवन करना कि मन वचन कायके हलन चलनसे कर्मोंका आस्रव होता है सो बहुत दुखदाई है, इससे बचना चाहिए।

८ संवर भावना—ऐसा विचार करना कि संवरसे यह जीव संसारसमुद्रसे पार हो सकता है, अतएव संवरके कारणोंको ग्रहण करना चाहिए।

९ निर्जराभावना—ऐसा विचार करना कि कर्मोंका कुछ दूर होना निर्जरा है, अतएव इसके कारणोंको जानकर कर्मोंको दूर करना चाहिए।

१० लोकभावना—लोकके स्वरूपका चिंतवन करना कि कितना बड़ा है, उसमें कौन २ स्थान हैं और किस २ स्थानमें क्या २ रचना है और इससे संसार परिभ्रमणकी दशा मालूम करना।

११ बोधिदुर्लभभावना—ऐसा विचार करना कि मनुष्य देह बड़ी [illegible] प्राप्त हुई है इसको पाकर

व्यर्थ न खोना चाहिए, किंतु रत्नत्रयकी प्राप्ति करना चाहिए।

१२ धर्मभावना—धर्मके स्वरूपका चिंतवन करना कि इसीसे सांसारिक और पारलौकिक सर्व प्रकारके सुख प्राप्त हो सकते हैं।

परीषह—मुनि लोग कर्म्मोंकी निर्जरा, और काय क्लेश करनेके लिये समताभावोंसे जो स्वयं दुःख सहन करते हैं उन्हें परीषह[1] कहते हैं।

परीषह २२ हैः—क्षुधा, तृषा, शीत, उष्ण, दंश-मसक, नाग्न्य, अरति, स्त्री, चर्या, आसन, शय्या, आक्रोश, वध, याचना, अलाभ, रोग, तृणस्पर्श, मल, सत्कार पुरस्कार, प्रज्ञा, अज्ञान, और अदर्शन।

१ भूखके सहन करनेको क्षुधापरीषह कहते हैं।

२ प्यासके सहन करनेको तृषापरीषह कहते हैं।

३ सर्दीका दुःख सहन करनेको शीतपरीषह कहते हैं।

४ गर्मीका दुःख सहन करनेको उष्णपरीषह कहते हैं।

५ डांस मच्छर बिच्छू वगैरह जीवोंके काटनेके दुःख सहन करनेको दंश-मसकपरीषह कहते हैं।

१ परीषहको परीषह सहन समझना चाहिए।

६ नग्न रहकर भी लज्जा ग्लानि और विकार नहीं करनेको नाग्न्यपरीषह कहते हैं।

७ अनिष्ट वस्तु पर भी द्वेष नहीं करनेको अरतिपरीषह कहते हैं।

८ ब्रह्मचर्य्यव्रत भंग करनेके लिये स्त्रियों द्वारा अनेक उपद्रव होने पर भी विकार नहीं करना स्त्रीपरीषह है।

९ चलते समय पैरमें कांटा कंकर चुभ जानेका दुःख सहन करना, चर्यापरीषह है।

१० देर तक एक ही आसनसे बैठे रहनेका दुःख सहन करना, आसनपरीषह है।

११ कंकरीली ज़मीन अथवा पत्थरपर एक ही करवटसे सोनेका दुःख सहन करना, शय्यापरीषह है।

१२ किसी दुष्ट पुरुषके गाली वगैरह कटु वचन कहनेपर भी क्रोध न करके क्षमा धारण करना, आक्रोशपरीषह है।

१२ किसी दुष्ट पुरुष द्वारा मारे पीटे जानेपर भी क्रोध और क्लेश नहीं करना, वधपरीषह है।

१४ भूख प्यास लगने अथवा रोग हो जाने पर भी भोजन औषधादिक नहीं मांगना, याचनापरीषह है।

१५ भोजन न मिलने अथवा अन्तराय हो जाने पर क्लेशित न होना, अलाभपरीषह है।

१६ [illegible] न करना रोगपरीषह है

१७ शरीरमें कांच, सुई, कांटे वगैरहके चुभ जानेका दुःख सहन करना, तृणस्पर्शपरीषह है।

१८ शरीरमें पसीना आजाने अथवा धूल मिट्टी लग जानेका दुःख सहन करना और स्नान नहीं करना, मलपरीषह है।

१९ किसी पुरुषके द्वारा आदर सत्कार अथवा विनय प्रणाम वगैरह न करने पर बुरा न मानना, सत्कार-पुरस्कारपरीषह है।

२० अधिक विद्वान् अथवा चारित्रवान् हो जाने-पर भी अहङ्कार न करना, प्रज्ञापरीषह है।

२१ अधिक तपश्चरण करनेपर भी अवधिज्ञानादि न होनेपर क्लेश न करना, अज्ञानपरीषह है।

२२ बहुत काल तक तपश्चरण करनेपर भी कुछ फल प्राप्ति न होनेसे सम्यग्दर्शनको दूषित न करना, अदर्शनपरीषह है।

चारित्र—आत्मस्वरूपमें स्थित होना चारित्र है। इसके ५ भेद हैं:—सामायिक[1], छेदोपस्थापना[2], परिहार-विशुद्धि[3], सूक्ष्मसांपराय, यथाख्यात।

---

१ सब जीवोंमें समता भाव रखना, सुख दुखमें मध्यस्थ रहना, शुभ अशुभ विकल्पोंका त्याग करना, सामायिकचारित्र है। २ सामायिकसे डिग जानेपर फिर अपनेको अपनी शुद्ध आत्माके अनुभवनमें लगाना तथा व्रतादिकमें भंग पड़नेपर प्रायश्चित्तादि लेकर सावधान होना, छेदोपस्थापना चारित्र है। ३ राग द्वेषादि विकल्पोंको त्यागकर अधिकताके साथ आत्मशुद्धि करना परिहार-

निर्जरा ।

कर्मोंका थोड़ा २ भाग क्षय होते जाना निर्जरा है। जैसे नावमें जो पानी भर गया था उसे थोड़ा २ करके बाहर फेंकना, इसी प्रकार आत्माके साथ जो कर्म इकट्ठे हो रहे हैं उनका थोड़ा २ क्षय होना निर्जरा है। इसके भी दो भेद हैं:—१ भावनिर्जरा, २ द्रव्यनिर्जरा। आत्माके जिस भावसे कर्म फल देकर नष्ट होता है वह भावनिर्जरा है और समय पाकर तपसे कर्मका नाश होना द्रव्यनिर्जरा है।

मोक्ष ।

समस्त कर्मोंका क्षय हो जाना मोक्ष है। जैसे एक नावका भरा हुआ पानी बाहर फेंका जाय तो ज्यों २ उसका पानी बाहर फेंका जाता है त्यों २ वह नाव ऊपर आती जाती है यहां तक कि वह बिलकुल पानीके ऊपर आ जाती है, इसी प्रकार संवरपूर्वक निर्जरा होते २ जब सम्पूर्ण कर्मोंका क्षय हो जाता है केवल आत्माका शुद्ध स्वरूप रह जाता है तभी वह आत्मा

विशुद्धि चारित्र है। ४ अपनी आत्माको कषायसे रहित करते करते सूक्ष्मलोभ कषाय नाम मात्रको रह जाय उसको सूक्ष्मसांपराय कहते हैं। उसके भी दूर करनेकी कोशिश करना सूक्ष्मसांपराय चारित्र है। ५ कषायरहित जैसा जैसा निष्कंप आत्माका शुद्ध स्वभाव है वैसा होकर उसमें मग्न होना, यथाख्यात चारित्र है।

ऊर्द्धगमनस्वभाव होनेसे तीनों लोकोंके ऊपर जा विराजमान होता है और इसीका नाम मोक्ष है।

पदार्थ।

इन्हीं सात तत्त्वोंमें पुण्य और पाप मिलानेसे ९ पदार्थ कहलाते हैं।

पुण्य।

पुण्य उसे कहते हैं जिसके उदयसे जीवोंको इष्ट वस्तु, सुख सामग्री वगैरह मिले। जैसे किसी पुरुषको व्यापारमें खूब लाभ हुआ, घरमें एक पुत्र भी उत्पन्न हुआ, एक पढ़ लिखकर उच्चपदपर नियत हुआ, ये सब पुण्यके उदयसे समझना चाहिए।

पाप।

पाप उसे कहते हैं जिसके उदयसे जीवोंको दुःख देनेवाली वस्तुओंका संयोग हो। जैसे कोई रोग हो गया अथवा पुत्र मर गया अथवा धन चोरी चला गया ये सब पापके उदयसे समझना चाहिए।

विद्या और जातिकी उन्नति करना, परोपकार करना, धर्मका पालन करना आदि कार्योंसे पुण्यका बंध होता है और जूआ खेलना, झूठ बोलना, चोरी करना, दूसरेका बुरा विचारना आदि बुरे कार्योंसे पापका बंध होता है।

प्रश्नावली।

१ प्राण कितने होते हैं? ये जीवमें ही होते हैं या अजीवमें भी? देव, पंचेंद्रिय असेनी तिर्यंच, वृक्ष, नारकी, स्त्री, मक्खी और चींटीके कौन २ प्राण हैं?

२ प्राणरहित पदार्थोंके कितने भेद हैं, नाम सहित बताओ?

३ भावास्रव, द्रव्यास्रव तथा भाव निर्जरा, द्रव्य निर्जरामें क्या भेद है, उदाहरण देकर बताओ तथा यह भी बताओ कि जहां भावास्रव होता है वहां द्रव्यास्रव होता है या नहीं?

४ बंध किसे कहते हैं? इसके कौन २ कारण हैं और ऐसे कौन २ कारण हैं जिनसे बंध नहीं होता?

५ निर्जरा और मोक्षमें क्या अंतर है? पहले निर्जरा होती है या मोक्ष?

६ मिथ्यात्व, योग, गुप्ति, आदाननिक्षेपणसमिति, अनुप्रेक्षा-चारित्र, अदर्शनपरीषहजय, लोकभावना, संशयमिथ्यात्वसे क्या समझते हो?

७ बताओ इन साधुओंने कौन २ परीषह सहन की?

(क) एक तपस्वी गर्मीके दिनोंमें दोपहरके समय एक पहाड़-पर ध्यान लगाए बैठे हैं। प्याससे गला सूख गया है, अढ़ाई घंटे हो गए हैं, बराबर एक ही आसनसे बैठे हैं।

(ख) सुकमालका आधा शरीर स्यालनीने भक्षण कर लिया।

(ग) एक मुनि महाराजको एक दुष्ट राजाने पकड़वाकर बंदीगृहमें डलवा दिया वहांपर एक सांपने उन्हें काट खाया।

(घ) जिस [illegible] ध्यानारूढ़ थे, सीताके जीवने

सर्पने आकर अपने अनेक हावभावसे उनको मोहित करनेका बहुत कुछ उद्योग किया, परंतु वे अपने ध्यानसे विचल न हुए।

(ङ) एक साधु धर्मोपदेश दे रहे थे, कुछ शराबियोंने आकर उनको अपशब्द कहे और उनपर पत्थर बरसाए।

(च) राजा श्रेणिकने एक मुनिके गलेमें मरा हुआ सर्प डाल दिया था जिसके सम्बंधसे बहुतसे कीड़े मकोड़े उनके शरीर-पर चढ़ गए?

(छ) एक तपस्वीको खुजलीका रोग हो गया जिससे तमाम शरीरमें बड़े २ ज़खम (फोड़े) हो गए परंतु उन्होंने किसीसे दवा नहीं मांगी।

८ निम्न लिखित प्रश्नोंके उत्तर दो:—

(क) जीव तत्त्वका अन्यतत्त्वोंसे क्या सम्बन्ध है और कब तक है?

(ख) क्या ऐसा होना सम्भव है कि कोई समय ऐसा आवे जब आस्रव और बंध बिलकुल न हों, केवल निर्जरा ही हो?

(ग) बंध जो कहनेमें आता है, सो किस चीज़का होता है?

(घ) संवर भावनामें क्या चिंतवन किया जाता है?

(ङ) यथाख्यातचारित्रीके आस्रव और बंध होते हैं या नहीं?

(च) पहले आस्रव होता है या बंध?

(छ) परीषह कौन सहन करते हैं और एक समयमें एक ही परीषह सहन होती है या अधिक भी?

९ पुण्य पाप किसे कहते हैं और कैसे २ काम करनेसे वे होते हैं ?

१० निम्न लिखित कार्योंसे पुण्य होगा या पाप–?

(क) एक मनुष्यने एक शहरमें जहां १० मंदिर थे और उनमेंसे दो तीन खंडहर हो गए थे और दो तीनमें पूजा परिक्षालनका भी कोई प्रबंध न था, वहां अपना नाम करनेके लिए ग्यारहवां मंदिर बनवा दिया और पूजनके लिए चार रुपये मासिकका एक पुजारी नौकर रख दिया।

(ख) एक सेठ प्रतिदिवस बड़े नम्र भावोंसे दर्शन, पूजन, सामायिक, स्वाध्याय करते हैं।

(ग) एक धनीने एक दूर ग्रामके जीर्ण मंदिरका उद्धार करवाया और किसीको भी यह प्रगट न किया कि हमने रुपया लगाया है।

(घ) एक जैनीने पूरे ९००० कलदारमें अपनी बेटीको बेचकर रथ चलाया और सिंघई पदवी प्राप्त की।

(ङ) यह विचारकर रिशवत (घूंस) लेना कि इसको धर्मके कामोंमें लगाएँगे।

(च) एक पंडित महाशय किसी बातको न समझ सके, उन्होंने यह तो नहीं कहा कि मैं इसे नहीं समझा हूं किंतु उलटी तरहसे समझा दिया।

(छ) एक विद्यार्थीने पुस्तकोंके लिए अपने माता पितासे कुछ दाम मांगे, परंतु उन्होंने देनेसे इंकार किया, विद्यार्थीने दूकानमेंसे पैसे चुराकर पुस्तक मोल ले ली।

(ज) पाठशालाएँ खुलवानेसे; भट्टारक बनकर धर्मध्यान कुछ भी न करके मजेसे चैन उड़ानेसे; ऐसे भट्टारकोंकी वैयावृत्ति करनेसे; धर्मके लिए झूठ बोलनेसे; बालबच्चोंको न पढ़ानेसे; अनाथालय, औषधालय खुलवानेसे; विधवाओंका विवाह करानेसे, हिंसक मनुष्योंके साथ सम्बंध रखनेसे; निर्धन भाईयोंकी सहायता करनेसे; पेटके लिए भीख मांगनेसे; विद्या उपार्जन करनेके लिए अन्य-देशोंमें जानेसे; झूठी हांमें हां मिलानेसे; विद्यार्थियोंको छात्रवृत्ति देकर पढ़ानेसे, जवान भाई बंधुओंके मरनेपर उधार लेकर भाई-योंको लड्डू खिलानेसे; बच्चोंकी छोटी उम्रमें शादी करनेसे; धर्मादेके रुपयेको व्यर्थ खर्च करनेसे ।

दशवाँ पाठ ।

कर्मोंकी उत्तर प्रकृतियां ।

कर्मकी मूल प्रकृतियां ८ हैं और उत्तर प्रकृतियां १४८ हैं । ज्ञानावरणकी ५, दर्शनावरणकी ९, वेदनीय-की २, मोहनीयकी २८, आयुकी ४, नामकी ९३, गोत्रकी २ और अंतरायकी ५ ।

ज्ञानावरणकर्म—मतिज्ञानावरण, श्रुतज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण और केवल-ज्ञानावरण ये पांच ज्ञानावरणकर्मके भेद अथवा प्रकृ-तियां हैं ।

मतिज्ञानावरण उसे कहते हैं जो मतिज्ञानको न होने दे अथवा मतिज्ञानका आवरण अथवा घात करे।

श्रुतज्ञानावरण उसे कहते हैं जो श्रुतज्ञानका घात करे। अवधिज्ञानावरण उसे कहते हैं जो अवधिज्ञानका घात करे।

मनःपर्ययज्ञानावरण उसे कहते हैं जो मनःपर्ययज्ञानका घात करे।

केवलज्ञानावरण उसे कहते हैं जो केवलज्ञानका घात करे।

दर्शनावरणकर्म—चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण, अवधिदर्शनावरण, केवलदर्शनावरण, निद्रा, निद्रानिद्रा, प्रचला, प्रचलाप्रचला, और स्त्यानगृद्धि, ये ९ दर्शनावरणकर्मकी प्रकृतियां हैं।

---

१ इन्द्रियां तथा मनसे जो कुछ जाना जाता है उसे मतिज्ञान कहते हैं। २ मतिज्ञानसे जानी हुई वस्तुके सम्बंधसे अन्य बातको जानना श्रुतज्ञान है। ये दोनों ज्ञान चाहे कम चाहे ज़ियादह प्रत्येक जीवके होते हैं। ३ विना इन्द्रियोंकी सहायताके आत्मीक शक्तिसे रूपी पदार्थोंके जाननेको अवधिज्ञान कहते हैं। यह पंचेंद्रिय संज्ञी जीवके ही होता है। ४ विना इन्द्रियोंकी सहायताके दूसरेके मनकी बात जान लेनेको मनःपर्ययज्ञान कहते हैं। यह ज्ञान मुनिके ही हो सकता है। ५ लोक अलोककी, भूत भविष्यत् और वर्तमानकालकी सर्ववस्तुओंको और उनके सर्व गुण पर्यायों (हालतों) को एक साथ एक काल में इन्द्रियोंकी सहायता विना [illegible] जाननेको केवलज्ञान कहते हैं। केवलज्ञानीके ज्ञानसे [illegible] नहीं रहती।

चक्षुदर्शनावरण उसे कहते हैं जो चक्षुदर्शन (आंखोंसे देखना) न होने दे।

अचक्षुदर्शनावरण उसे कहते हैं जो अचक्षुदर्शन[1] न होने दे।

अवधिदर्शनावरण उसे कहते हैं जो अवधिदर्शन न होने दे।

केवल दर्शनावरण उसे कहते हैं जो केवलदर्शन न होने दे।

निद्रा उसे कहते हैं जिसके उदयसे नींद आवे।

निद्रानिद्रा उसे कहते हैं जिसके उदयसे पूरी नींद लेकर भी फिर सोवे।

प्रचला उसे कहते हैं जिसके उदयसे बैठे २ ही सो जाय अर्थात् सोता भी रहे और कुछ जागता भी रहे।

प्रचलाप्रचला उसे कहते हैं जिसके उदयसे सोते हुए मुखसे लार बहने लगे और कुछ आंगोपांग भी चलते रहें।

स्त्यानगृद्धि उसे कहते हैं जिसके उदयसे नींदमें ही अपनी शक्तिसे बाहर कोई भारी कर्म कर ले और जागनेपर मालूम भी न हो कि मैंने क्या किया है।

---

1 आंखके सिवाय अन्य इन्द्रियों तथा मनसे किसी वस्तुकी सत्तामात्रका अवलोकन करना।

वेदनीयकर्म—सातावेदनीय और असातावेदनीय, ये दो वेदनीयकर्मके भेद हैं। इनके दूसरे नाम सद्वेद्य और असद्वेद्य हैं।

सातावेदनीय उसे कहते हैं जिसके उदयसे इन्द्रियजन्य सुख हो।

असातावेदनीय उसे कहते हैं जिसके उदयसे दुःख हो।

मोहनीयकर्म—मोहनीय कर्मके मूल दो भेद हैं। १ दर्शनमोहनीय २ चारित्रमोहनीय।

दर्शनमोहनीय उसे कहते हैं जो आत्माके सम्यग्दर्शन[1] गुणको घाते।

चारित्रमोहनीय उसे कहते हैं जो आत्माके चारित्र गुणको घाते।

दर्शनमोहनीयके ३ भेद हैं:—मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व और सम्यक्प्रकृति।

मिथ्यात्व उसे कहते हैं जिसके उदयसे जीवके यथार्थ तत्त्वोंका श्रद्धान न हो।

सम्यग्मिथ्यात्व उसे कहते हैं जिसके उदयसे मिले हुए परिणाम हों जिनको न तो सम्यक्त्वरूप ही कह सकते हैं और न मिथ्यात्वरूप।

सम्यक्प्रकृति उसे कहते हैं जिसके उदयसे यथार्थ

---

१ तत्त्वोंके सच्चे [illegible]को सम्यग्दर्शन कहते हैं।

तत्त्वोंका श्रद्धान चलायमान अथवा मलिन रूप
जाय ।

चारित्रमोहनीयके २ भेद हैं:—कषाय और नो
कषाय मोहनीयके १६ भेद हैं:— अनंतानुबन्धी
क्रोध, अनंतानुबन्धीमान, अनंतानुबन्धीमाया,
तानुबन्धीलोभ; अप्रत्याख्यानावरणक्रोध,
नावरणमान, अप्रत्याख्यानावरणमाया, अप्रत्या
नावरणलोभ; प्रत्याख्यानावरणक्रोध, प्रत्याख्यानावरण
मान, प्रत्याख्यानावरणमाया, प्रत्याख्यानावरणलोभ
संज्वलनक्रोध, संज्वलनमान, संज्वलनमाया, संज्व
लनलोभ ।

अनंतानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ, उन्हें कह
हैं जो आत्माके सम्यग्दर्शन गुणको घातें । जब त
ये कषाय रहती हैं सम्यग्दर्शन

संज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ उन्हें कहते हैं जो आत्माके यथाख्यातचारित्रको घातें अर्थात् जिनके उदयसे चरित्रकी पूर्णता न हो।

नो कपाय (किंचित्‌कपाय) के ९ भेद हैं:—हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुंवेद, नपुंसकवेद।

हास्य उसे कहते हैं जिसके उदयसे हंसी आवे।

रति उसे कहते हैं जिसके उदयसे प्रीति हो।

अरति उसे कहते हैं जिसके उदयसे अप्रीति हो।

शोक उसे कहते हैं जिसके उदयसे संताप हो।

भय उसे कहते हैं जिसके उदयसे डर लगे।

जुगुप्सा उसे कहते हैं जिसके उदयसे ग्लानि उत्पन्न हो।

स्त्रीवेद उसे कहते हैं जिसके उदयसे जीवके पुरुष-रमनेके भाव हों।

पुंवेद उसे कहते हैं जिसके उदयसे स्त्रीसे रमने के भाव हों।

नपुंसकवेद उसे कहते हैं जिसके उदयसे स्त्री, पुरुष दोनोंसे रमनेके परिणाम हों।

इस प्रकार १६ कपाय, ९ नोकपाय, ये चारित्र मोहनीयकी और ३ दर्शन मोहनीयकी मिलाकर २८ मोहनीय कर्मकी प्रकृ[illegible]

आयुकर्म—आयुकर्मके चार भेद हैं:—नरकायु, तिर्यंचायु, मनुष्यायु, देवायु।

नरकायु उसे कहते हैं जो जीवको नारकीके शरीरमें रोक रक्खे।

तिर्यंचायु उसे कहते हैं जो जीवको तिर्यंचके शरीरमें रोक रक्खे।

मनुष्यायु उसे कहते हैं जो जीवको मनुष्यके शरीरमें रोक रक्खे।

देवायु उसे कहते हैं जो जीवको देवके शरीरमें रोक रक्खे।

नामकर्म—इस कर्मकी ९३ प्रकृतियां हैं:—

४ गति (नरक, तिर्यंच, मनुष्य, देव)—इस गति नामकर्मके उदयसे जीवका आकार नारक, तिर्यंच, मनुष्य, देवके समान बनता है।

५ जाति (एकेंद्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय)-इस जाति नाम कर्मके उदयसे जीव एकेंद्रियादि शरीरको धारण करता है।

५ *शरीर (औदारिक, वैक्रियक, आहारक, तैजस, कार्माण)-इस शरीर नाम कर्मके उदयसे जीव औदारिकादि शरीरको धारण करता है।

* औदारिक शरीर स्थूल शरीरको कहते हैं। यह शरीर मनुष्य तिर्यंचोंके होता है। वैक्रियक शरीर देव, नारकी और किसी २ ऋद्धिधारी मुनिके भी होता

६ संस्थान (समचतुरस्रसंस्थान, न्यग्रोधपरिमंडल-संस्थान, स्वातिसंस्थान, कुब्जकसंस्थान, वामनसंस्थान, हुंडकसंस्थान)—इस नामकर्मके उदयसे शरीरकी आकृति बनती है।

समचतुरस्रसंस्थान नामकर्मके उदयसे शरीरकी आकृति ऊपर नीचे तथा बीचमें समान विभागसे बनती है।

न्यग्रोधपरिमंडल नाम कर्मके उदयसे जीवका शरीर वट (बड़) वृक्षकी तरह होता है अर्थात् नाभिसे नीचेके अंग छोटे और ऊपरके बड़े होते हैं।

स्वातिसंस्थान नामकर्मके उदयसे शरीरकी शकल पूर्वसे विलकुल उलटी होती है अर्थात् नाभिसे नीचेके अंग बड़े और ऊपरके छोटे होते हैं।

कुब्जक संस्थान नाम कर्मके उदयसे शरीर कुबड़ा होता है।

वामन संस्थान नाम कर्मके उदयसे शरीर बौना होता है।

हुंडक संस्थान नाम कर्मके उदयसे शरीरके अंगोपाग किसी खास शकलके नहीं होते हैं। कोई छोटा, कोई बड़ा, कोई कम, कोई जियादह होता है।

६ संहनन (वज्रर्षभनाराचसंहनन, वज्रनाराचसंहनन, नाराचसंहनन, अर्द्धनाराचसंहनन, कीलकसंहनन,

असंप्राप्तासृपाटिकासंहनन)–इस नाम कर्मके उदयसे हाड़ोंका बंधन विशेष होता है ।

वज्रर्षभनाराचसंहनन नाम कर्मके उदयसे वज्रके हाड़, वज्रके वेठन और वज्रकी कीलियां होती हैं ।

वज्रनाराचसंहनन नाम कर्मके उदयसे वज्रके हाड़ और वज्रकी कीली होती हैं परंतु वेठन वज्रके नहीं होते हैं ।

नाराचसंहनन नाम कर्मके उदयसे हड्डियोंमें वेठन और कीलें लगी होती हैं ।

अर्द्धनाराचसंहनन नाम कर्मके उदयसे हड्डियोंकी संधियां अर्द्ध कीलित होती हैं अर्थात् एक ओर कीलें लगी होती हैं किंतु दूसरी ओर नहीं होती हैं ।

कीलक संहनन नाम कर्मके उदयसे हड्डियोंकी संधियां कीलोंसे मिली होती हैं ।

असंप्राप्तासृपाटिकासंहनन नाम कर्मके उदयसे जुदी २ हड्डियां नसोंसे वंधी होती हैं, कीलें उनमें नहीं लगी होती हैं ।

८ स्पर्श (कठोर, कोमल, हलका, भारी, ठंडा, गरम, चिकना, रूखा)–इस नाम कर्मके उदयसे शरीरमें कठोर कोमल आदि स्पर्श होते हैं ।

५ रस (खट्टा, [illegible] कड़ुआ, कषायला, [illegible]

६ संस्थान (समचतुरस्रसंस्थान, न्यग्रोधपरिमंडल-संस्थान, स्वातिसंस्थान, कुब्जकसंस्थान, वामनसंस्थान, हुंडकसंस्थान)—इस नामकर्मके उदयसे शरीरकी आकृति बनती है।

समचतुरस्रसंस्थान नामकर्मके उदयसे शरीरकी आकृति ऊपर नीचे तथा बीचमें समान विभागसे बनती है।

न्यग्रोधपरिमंडल नाम कर्मके उदयसे जीवका शरीर वट (बड़) वृक्षकी तरह होता है अर्थात् नाभिसे नीचेके अंग छोटे और ऊपरके बड़े होते हैं।

स्वातिसंस्थान नामकर्मके उदयसे शरीरकी शकल पूर्वसे बिलकुल उलटी होती है अर्थात् नाभिसे नीचेके अंग बड़े और ऊपरके छोटे होते हैं।

कुब्जक संस्थान नाम कर्मके उदयसे शरीर कुबड़ा होता है।

वामन संस्थान नाम कर्मके उदयसे शरीर बौना होता है।

हुंडक संस्थान नाम कर्मके उदयसे शरीरके अंगोपांग किसी खास शकलके नहीं होते हैं। कोई छोटा, कोई बड़ा, कोई कम, कोई ज़ियादह होता है।

६ संहनन (वज्रर्षभनाराचसंहनन, वज्रनाराचसंहनन. नाराचसंहनन, अर्द्धनाराचसंहनन, कीलकसंहनन,

२ विहायोगति (शुभ, अशुभ)—इस नाम कर्मके उदयसे जीव आकाशमें गमन करता है।

१ उच्छ्वास—इस नाम कर्मके उदयसे जीव श्वास और उच्छ्वास लेता है।

१ त्रस—इस नाम कर्मके उदयसे द्वीन्द्रियादि जीवोंमें जन्म होता है अर्थात् द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय अथवा पंचेंद्रिय होता है।

१ स्थावर—इस नाम कर्मके उदयसे पृथिवी, अप्, तेज, वायु अथवा वनस्पतिमें अर्थात् एकेंद्रियमें जन्म होता है।

१ बादर—यह वह नामकर्म है जिसके उदयसे दूसरेको रोकनेवाला और स्वयं दूसरेसे रुकनेवाला शरीर होता है।

१ सूक्ष्म—यह वह नामकर्म है जिसके उदयसे ऐसा बारीक शरीर होता है जो न तो किसीसे रुकता और न किसीको रोकता है। लोहे, मिट्टी, पत्थरके बीचमें होकर निकल जाता है।

१ पर्याप्ति[1]—यह वह नामकर्म है जिसके उदयसे

---

[1] एकेंद्रिय जीवके भाषा और मनके विना ४ पर्याप्ति होती हैं। द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और असैनी पंचेंद्रिय जीवके मनके विना ५ पर्याप्ति होती हैं। सैनी पंचेन्द्रिय जीवके छहों पर्याप्ति होती हैं।

१ सुस्वर—इस नाम कर्मके उदयसे स्वर अच्छा होता है।

१ दुःस्वर—इस नाम कर्मके उदयसे स्वर अच्छा नहीं होता है।

१ आदेय—इस नाम कर्मके उदयसे शरीरपर प्रभा और कांति होती है।

१ अनादेय—इस नाम कर्मके उदयसे शरीर प्रभा और कांतिरहित होता है।

१ यशःकीर्ति—इस नाम कर्मके उदयसे जीवकी संसारमें प्रशंसा और कीर्ति होती है।

१ अयशःकीर्ति—इस नाम कर्मके उदयसे जीवकी संसारमें कीर्ति नहीं होने पाती है।

१ तीर्थंकर—इस नाम कर्मके उदयसे अरहंत पद प्राप्त होता है अर्थात् तीर्थंकर होता है।

गोत्र कर्म।

गोत्रकर्मके २ भेद हैं:—१ उच्चगोत्र २ नीचगोत्र। उच्च गोत्र उसे कहते हैं जिसके उदयसे जीव लोकमान्य कुलमें उत्पन्न हो।

नीचगोत्र उसे कहते हैं [illegible] जीव लोकनिंदित अर्थात् नीचकु[illegible]

अपने २ योग्य आहार, शरीर, इन्द्रिय, भाषा और मन, इन पर्याप्तियोंकी पूर्णता हो।

१ अपर्याप्ति—यह वह नाम कर्म है जिसके उद एक भी पर्याप्ति पूर्ण न हो।

१ प्रत्येक—इस नाम कर्मके उदयसे एक शरीर स्वामी एक ही जीव होता है।

१ साधारण—इस नाम कर्मके उदयसे एक श रके स्वामी अनेक जीव होते हैं।

१ स्थिर—इस नाम कर्मके उदयसे शरीरके और उपधातु अपने २ ठिकाने रहते हैं।

१ अस्थिर—इस नाम कर्मके उदयसे शरीरके और उपधातु अपने २ ठिकाने नहीं रहते हैं।

१ शुभ—इस नाम कर्मके उदयसे शरीरके सुंदर होते हैं।

१ अशुभ—इस नाम कर्मके उदयसे शरीरके असुंदर और भद्दे होते हैं।

१ सुभग—इस नाम कर्मके अपनेसे प्रीति होती है।

१ दुर्भग—इस नाम कर्मके जीव नेसे अप्रीति व वैर करते हैं।

निगोदिया जीवोंका एक ही शरीर लेना सब क्रिया एक से

१ सुस्वर—इस नाम कर्मके उदयसे स्वर अच्छा होता है।

१ दुःस्वर—इस नाम कर्मके उदयसे स्वर अच्छा नहीं होता है।

१ आदेय—इस नाम कर्मके उदयसे शरीरपर प्रभा और कांति होती है।

१ अनादेय—इस नाम कर्मके उदयसे शरीर प्रभा और कांतिरहित होता है।

१ यशःकीर्ति—इस नाम कर्मके उदयसे जीवकी संसारमें प्रशंसा और कीर्ति होती है।

१ अयशःकीर्ति—इस नाम कर्मके उदयसे जीवकी संसारमें कीर्ति नहीं होने पाती है।

१ तीर्थंकर—इस नाम कर्मके उदयसे अरहंत पद प्राप्त होता है अर्थात् तीर्थंकर होता है।

गोत्र कर्म।

गोत्रकर्मके २ भेद हैं:—१ उच्चगोत्र २ नीचगोत्र। उच्च गोत्र उसे कहते हैं जिसके उदयसे जीव लोकमान्य कुलमें उत्पन्न हो।

नीचगो[illegible]ते हैं जिसके उदयसे जीव निंदित [illegible]लमें उत्पन्न हो।

अपने २ योग्य आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, भाषा और मन, इन पर्याप्तियोंकी पूर्णता हो।

१ अपर्याप्ति—यह वह नाम कर्म है जिसके उदयसे एक भी पर्याप्ति पूर्ण न हो।

१ प्रत्येक—इस नाम कर्मके उदयसे एक शरीरका स्वामी एक ही जीव होता है।

१ साधारण—इस नाम कर्मके उदयसे एक शरीरके स्वामी अनेक जीव होते हैं।

१ स्थिर—इस नाम कर्मके उदयसे शरीरके धातु और उपधातु अपने २ ठिकाने रहते हैं।

१ अस्थिर—इस नाम कर्मके उदयसे शरीरके धातु और उपधातु अपने २ ठिकाने नहीं रहते हैं।

१ शुभ—इस नाम कर्मके उदयसे शरीरके अवयव सुंदर होते हैं।

१ अशुभ—इस नाम कर्मके उदयसे शरीरके अवयव असुंदर और भद्दे होते हैं।

१ सुभग—इस नाम कर्मके उदयसे दूसरे जीवोंको अपनेसे प्रीति होती है।

१ दुर्भग—इस नाम कर्मके उदयसे दूसरे जीव अपनेसे अप्रीति व वैर करते हैं।

---

१ अनंते निगोदिया जीवोंका एक ही शरीर होता है और उन सबका जन्म मरण, [illegible] ऐसा सब क्रिया एक साथ होती है।

१ सुस्वर—इस नाम कर्मके उदयसे स्वर अच्छा होता है।

१ दुःस्वर—इस नाम कर्मके उदयसे स्वर अच्छा नहीं होता है।

१ आदेय—इस नाम कर्मके उदयसे शरीरपर प्रभा और कांति होती है।

१ अनादेय—इस नाम कर्मके उदयसे शरीर प्रभा और कांतिरहित होता है।

१ यशःकीर्ति—इस नाम कर्मके उदयसे जीवकी संसारमें प्रशंसा और कीर्ति होती है।

१ अयशःकीर्ति—इस नाम कर्मके उदयसे जीवकी संसारमें कीर्ति नहीं होने पाती है।

१ तीर्थंकर—इस नाम कर्मके उदयसे अरहंत पद प्राप्त होता है अर्थात् तीर्थंकर होता है।

गोत्र कर्म।

गोत्रकर्मके २ भेद हैं:—१ उच्चगोत्र २ नीचगोत्र। उच्च गोत्र उसे कहते हैं जिसके उदयसे जीव लोकमान्य कुलमें उत्पन्न हो।

[illegible] कहते हैं जिसके उदयसे निंदित [illegible] कुलमें उत्पन्न हो।

अंतराय कर्म।

अंतराय कर्मके ५ भेद हैं:—१ दानांतराय २ लाभांतराय, ३ भोगांतराय, ४ उपभोगांतराय, ५ वीर्यांतराय।

दानांतरायकर्म उसे कहते हैं जिसके उदयसे यह जीव दान न दे सके।

लाभांतरायकर्म उसे कहते हैं जिसके उदयसे लाभ न हो सके।

भोगांतरायकर्म उसे कहते हैं जिसके उदयसे उत्तम पदार्थोंका भोग न कर सके।

उपभोगांतरायकर्म उसे कहते हैं जिसके उदयसे वस्त्र आभूषणादि पदार्थोंका उपभोग न कर सके।

वीर्यांतरायकर्म उसे कहते हैं जिसके उदयसे शरीरमें सामर्थ्य न हो।

प्रश्नावली.

१ कर्म किसे कहते हैं? कर्मकी मूल और उत्तरप्रकृतियां कितनी हैं?

२ सबसे अधिक प्रकृतियां किस कर्मकी हैं और सबसे कम किसकी?

३ अवधिज्ञान, अचक्षुदर्शन, सम्यग्दर्शन, संहनन, संस्थान, अगुरुलघु, आहारकशरीर, जुगुप्सा, सम्यक्प्रकृति, प्रचलाप्रचला, विग्रहगति, मतिज्ञान, नोकषाय, आनुपूर्व्य, साधारण, अनादेय, इनसे क्या समझते हो?